



জ্যোতিকণা, সাহিত্যকলা, চিন্তামণি, মানসী, গুটিমালী,
জ্যাতীর্থ আদির গ্রন্থকার

শ্রীনৌলমণি ফুকন প্রণীত
যোৰহাট
১ জেত, ৫০২ শক্রবাজ।

ପ୍ରକାଶକ—

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ବାତବି ପ୍ରେସ୍, ଯୋବହାଟ ।

ପ୍ରଥମ ପ୍ରକାଶ

ଜୟଠ—୫୦୨ ଶକ୍ତବାକ

ମେହୀ—୧୯୫୧

ଯୋବହାଟର ବାତବି ପ୍ରେସ୍ତ ଛାପା ।

উচর্ণা



মহাভাব “ভাবত-ত্যাগ” মন্ত্রক দীক্ষিত হৈ যি সকল
দেশৰ নব-নাৰৌয়ে মুক্তি-মন্দিৰৰ তুলাৰ মুকলি কৰি
বিয়ালিশৰ আনন্দোলনত নিজক বলিদান দি
কুষ্ঠাহীন বৈকুষ্ঠলৈ প্ৰয়াণ কৰি স্বৰ্গাদপি
গবিয়সী জননী জন্মভূমিৰ স্বাধীনতাৰ
পতাকাৰ ভাবতৰ মুক্ত-আকাশত
হিমালয়ৰ সমানে উচ্চ
কৰি দৈ গল
সেই শহীদসকলৰ পরিত্র নামত
“জিঞ্জিৰি”ৰ মৰ্য্য-কথা
উচর্ণা কৰিলো।
ত্ৰীণীলমণি ফুকন

“জিঞ্জিৰি”ৰ পৰিচয়

মহাভাৰত মহাবাণী হল—“চাৰত-ভ্যাগ”। লগে লগে কাৰা-
বণ। জগত্ত্বার্থৰ শান্তীৰ স্বে দেশ ফেলমুৰা হল। এয়ে বিষ্ণালিশৰ
মান্দোন। হিংসা অহিংসাৰ মাজত তহ্যাময়া বণ আৰম্ভ হল।
মেশব্যাপি আধোননৰ ধৃমহা আহিল, ঢউ উটিল। কাণ্ডাৰী-বিশীন
নান তল-গুপৰ হৃষ্টল ধৰিলে। হিংসা অহিংসাৰ ঘোমোজাত পৰি দেশে
কেনি খোজ দিব, স্ত্ৰি নোহোৱা হল। এফালে শক্তিৰ সংহাৰ-মৃক্তি,
আন ফালে অনন্ত মুক্তি মন্দিৰৰ দুৱাৰ ডলিত—এখোজ মাত্ৰ বাকী।

কাৰা-মন্দিৰ স্তৰীগ সকলেদে ভৱি পৰিল, নথৰা হল। চৌৰে
ইনি নিষ্ঠা খেৰকুটা চালৰ স্বে নিষ্ঠেও মেই ভৌৰৰ শান্তী তৈ
মুগালো। মেৱ-দৰিশনৰ আশাত মুক্তি মন্দিৰ সোমালোগৈ। তাত
ষি দেখিলো, যি শুনিলো, দণ্ডত বি অনুভৱ কৰিলো, আজ্ঞ-পৰীক্ষাত
কি পালো—সকলো অচূড়তিকেই প্ৰকাশ কৰিবৰ এটি প্ৰৱল টঙ্গা
হোৱাত ভাৰোৱেষকাৰী কৰিতা নাম দি লিখা হল, বাকে ভাৰগ্রামী
সকলে শাৰ সৃং ধৰি অকৃত কৃপ হিব পাৰে।

সন্ধাব লগে লগে জেল সোমালো। সোমোৱা মাত্ৰেই মনৰ
যেন কিবা এটা পৰিবৰ্তন ঘটিল। দুৱাৰখন বৰু কৰিলতেই যেন
স্বকীয়া এখন ঠাই পালোহি—বহিৰ্জগতৰ লগত কোনো সহজ নাই।
চাৰিউকালে যেন জিঞ্জিৰিবেই শৰ শৰণিবলৈ পালো। শুৰীৰ জোখ-
মাখ ললে, কানি-কাপোৰ কেই ডোখৰ চালে, বাকচ-বিছনা ঘেলি
চালে, “কঢ়ানী” তৈৱাৰ কৰা সকলোখিনি কাম সমাপন হল।
তেতিয়া তিতৰ ফালৰ দুৱাৰখন ঘেলি সুমাই দি নিমিষতে বৰু

करि लिले। उरामस्ता देखिलो। खेडे क पाचते देखो सजांव
पथी अहिना कुलिव दबे तिनि चाबि-श मृक्त-प्राण डेकाई किरिसियावैले
धरिले। तेऊळोकव आजत परि निष्कर कथा तेनेट पाहविलो।
देखो साधकव दल उपःक्रिट देशा धरि यज्ञहल शेडि वहि
आছे। अग्नीय लोकप्रिय वस्तैले प्रमुख पूज्याची मकल बेदी
पाति वज्रनव आजतो मृक्त जीवनव दैरवाणी शुनि दुःसाध्य साधना
करि आছे। तेऊळोकव द्वारव आलोकपुरीव सौन्दर्या देखि तवध
मानिलो। वज्रीशालतेहि आश्रम-मूलड रुद्र अग्नव कविलो।
वाहिवर रुक्त अहकाव सकलो आंतरि गल। एहि कुत्र जीरने सेट
मकल त्यागी यहू जीरनव सक्षम्य लाभ कविले।

दिने यि ताव मनत उदय हैचिल ताक एकोटि कविताकावे
प्रकाश कविछिलो। प्रथम माह एहिवै कटालो। एष कविता विलाकव
माजेनियेहि जेलव डित्वत यि विलाक निर्म, निट्टव काम चलि
आहे गोणडावे वर्णना कवा हैचे। दैनिक एने निर्म निट्टव
कामे माहुहक आक किमानदूव अमाहुह एवि ताले, महायज्ञ गोप
करि पेलाव, ताक देखुवाव चैष्टा कवा हैचे। जेलत शाब्दिक
कष्ट तोगडकै मानसिक आक नैतिक अवनति मे किमान डवावत
सेहि कथा कविताव माजेदि इतित दि कोरा हैचे। व्याधव
शवत्तकै माज निशाखन तद्दुरेव म तिले व्याधवेहि मात येन शुनिहे
बुकु कपाई ताले। जेलव गोप्तव दुवावत अत्याचार, अविचार
आहि सदाय आघात दि एक वावेहे, सि सदाय कर्विव्हे
जिजिविचे, गर्विचे। शगधाव दुदय कपे, एकोगाव चूभाव है
द्वाव थोजे। जेलथाना शिलेव वज्जोळा वावेहि "पाराणी" बुलिव
नोवावि। ताव डित्वत कोनेओ काण निरिया विविलाक हाहाकाव धनि

ଉଠେ, କୁରିଲେ ତେଉ ଗୋଟି ସବା ବାହିନୀ ଘଟେ, ବଞ୍ଚକୁ, ଅଟ୍ଟିଇମି—
ଏହି ବିଳାକେହେ ସଥାର୍ଥତେ ପାଦାଣୀ କବି ତୋଳେ । ଏହି କାବ୍ୟେ କବ
ପାବି, “କାବା ! ତୋବ ଶୋଇ-ଶମ୍ଭବ ପ୍ରତ୍ୱବ୍ରତ, ଲୋରବ ଶିକଳି ଡାଳ ନହୟ
ସିମାନ କଟିନ ଯିମାନ ତୋବ ଗାବ ଛାୟାଗାଳ ।” ଜେଲବ ଭିତରତ
ଚିପାଈ-ଚଷ୍ଟବୀ ଫୁରୋତେ କଯଦୀବିଳାକବ ମନତ ଏନେ ଖେଳାର ସେବ
ବାସେ ଏକୋଟା ଥାପ ମାବି ଗଲ । କହିବୀର ଯନ ଅକ୍ରୂମିବ ମବେ ଏନେ
ଶୁକାନ୍ ଆକୁ ଉଦ୍‌ସ ସେ ଜେଲବ ଭିତରତ ଥକା ଗଢ଼-ଗଛନିଯେଓ ଗାତ
ଛା ବି ଶୀତଳ କବିଟି’ ନୋରାବେ । ସେଉଜୀଯା ବନନିଧନେଓ ଚକୁ ଜୁବ
ନକବେ । କଯଦୀ ଏଟାକ ହାତତ ଭବିତ ଶିକଳି ଦି ନିର୍ମି ଭାବେ ଲୈ
ମୁବା ଦୃଶ୍ୟ ଯିମାନ କଟୋବ ବିଧାନ ବୁଲି ମନତ ବିତକ୍ଷଣ ଅର୍ଥେ, ଶିକଳିଡାଳ
ନିଜେ ସିମାନ କଟୋବ ନହୟ । ହେତ୍ତାନ ଓପଜା କହିବୀର ପୋଚାକଟୋ ଏକମ
ବୈଷଫ୍ରଦ ଗାତ ହୁମାଇ ଦିଲେ ତେଣୁ ସେ ଚୋବ ନହୟ ଏହି କଥା ମନଟେ ଆହିଯ
ନୋଥୋଜେ । ଭାତଗାଳ ବିଞ୍ଚିତେ ପାତ୍ର ଚୋଚୋବାଇ ଲୈ ଫୁରୋତେ, ଘଟୋ
ଲାଚତ ଭାତ-ଆଜା ଦିଯେ ବାଜନି ସବବ ଆଲାକୁତକୈଓ ଭାତ-ପାନୀ
କଣୀ ହୋଇବା ସେ ଲାଗେ । ଓସଥ ଛିଯାବ ଚେତ, ପାଲମବା ପଥାଇ ବୋଗୀର
ବୋଗ ଦୂର କବାଟକୈ ମନବ ମାଯା ହୁଣ୍ଡି ବୋଗ ଆକୁ ବଢାୟ ହେ ।
ଲୋରବ ଶଲଥାବୋଦତକୈଓ ଦୂରବୀ-ପ୍ରହିରୀର ମନବୋବ ଟାନ ହେ ପବେ ।
ଜେଲବ ଭିତରତ ସାଧୁ ଚୋବ ପ୍ରଭେର କରିବବ ସାଧ୍ୟ ନାହିଁ । ଏହି କାବ୍ୟେଇ
ବନ୍ଦୀଶାଗକ “ନିର୍ମି ନିଷ୍ଠିବ ମହୁୟାତ୍ମାନ ଜୀବନବ ଚିତ୍ରଶାଳ” ବୁଲି କବ
ପାବି । ଜେଲବ ଭିତରତ ଦେଖା କାମ ବିଳାକ ସ୍ଵପ୍ନ ନେ ଦିଠିକ ବିଶ୍ୱାସ
କବା ଟାନ ହେ ପବେ । ଜେଲବ ଚାବି ବେବବ ମାଜତ ଇମାନ ବିଳାକ ନିଷ୍ଠିବ କାମ
ହୟ ତାକ ଥେବି କାବାବୋ ସେ ସବୁଗା ହୟ ଏନେ ଅଛୁମାନ କବିବ ପାବି ।
ଭାତ ଚକୁଲୋଟୁପିଓ ହାତେବେ ଯଚିବଲୈ ମାହ ନହୟ । ଡପତ ଚକୁଲୋ
ଚକୁହେଇ ଥାବ ଥାଯ । ନିଜବ ହଲଡାନୋ ଆନି-କୁନି ନିଜେ ଟାଚି ଦିବ

लागे। जीवात् विमानेहि निरिक्ष, सूर्य व मात नोंदोत्ताकै सहिब
लागिब। चिञ्चव-वाखव कविले कृष्णते किलटौ पवे। जेलखाना जूबि
यानिब। जीवा याहुहरेहि एथन महाश्शान। तात यात्य नोहोत्ताकैउ
दमव सकले। यश्चगः तोग कवा हस।

फाटकियाळ बुलिले ये समाजव अति युग्मीय कथा सेहकथा
तात गै अचूकर कविले। याहुहेहि याहुहक अकातवे कियान द्व
निष्ठू वाहाव कविव पावे, जेलखानातहे सेहि कथाव एकृत यर्ष
उपलक्षि कविव पावि। लाठी चार्जव पागला घटाव पागलायि कियान
द्व इव पावे, याहुह गुण हले कियान द्व निष्ठू इव पावे, तात
गै देखिले। जेलव भित्तवत एने कोनो गोकां काम नाइ, यि
काम करूनीव हत्तुलाई करोणा नहय। मरला पेलोत्ताव पवा गक्कव दवे
त्तेलव यानि टनालैके सकले। कासु कविव लागे। हातव एकोटा
विच्छा शिकाव याहुह। आहे मंडा। किंतु सि एतिथाओ उलाई आहि
निरव जीविका निर्वाह कविवलै उद्गोत्रा विधव व्याहृत। हव पवा नाइ।
एकोउन यर्ष याजके एकोदिन गै धर्ष, नीति, सदाचावव कथा पाल
यावि शिकाई आहे। किंतु पोटेहि संप्राहटो। फाटकियाळ सकले
येनेकै पक्कव दवे याहृत हस, ताव पवा कोनो शुफल पोरा
नावाव। गक्कव आगत टोकावी बोडाव दवे हस। फाटकत लघू रोवत
कुक गुण, यात मातिलेहि शाति, कथाई कथाई वेत, निजान काटक
इत्यादि व्याहृतविलाकै दण्डितव दोव संशोधन कवात्तकै उलाई आहि
तातोत्तैके कुकतव दोव कविवलै बुकूत अयाहुषिक साह लै आहिवलै
फाटकियाळ अस्यात है पवे। दोषीवे जेलखानात अहृतप्त हवलै
कोनो एकाव असव नापाव वा कावो पवा त्तेने बुजनि नापाव।
आळकोवा कोनटो दोवत पवे एहि चिष्ठाते चौबिश घटा अत्यान

है गाके। एने आत्मित अरम्भात जीरनव प्रति धर्माई नोहोरा है आहे। पाहुत ये रोनो निष्ठव कामत आगेचाटो व्याकारिक है परे।

विश्वासिश वाज्ञैतिक बद्दीसकलव वावे रेलव चित्र स्फीया। रेल तेंत्लोकव पक्षे एथन शायापूरी। वाहिवे अज्ञकाव विकट हाहिलेओ, तेंत्लोके मनव आलोक पूरीतेह सराय विचरण करे। कावागाव तेंत्लोकव साधनाव थल। तात तेंत्लोके मृत्तिनाथव चबंडत केवल अननीव आकाङ्क्षत मृत्ति विचावे। तेंत्लोकव विश्वास ये अननी वर्षिओ आजि शृङ्खलिता, कावाव मृक्त द्वारावे एदिन हिंसालव घरे उच्च शिव है ओलाई थाव। सागवे आको पांग पधालिव, बळूत विक्का नीलाचल आको शोडिव। सेतक मृक्तव शाधीनता गाने देशव शृष्ट शाधीन आग आको अगाह तूलिव। इसात सजाव पधीव घरे बद्दी है थका डेक्का-गाडकरे एदिन मृक्तिगान गाट विमान किपाई ओलाई थाव। एंत्लोकव मानत बद्दीशाल शक्तिशाल है उट्टिल। पोराती वाखिनी आजि गंवाळत क्षेत्रेओ, सावपाले एगाल पोरालीव संते गंवाल लैल केनि आग मारिव बोरा टान। देशसेतक सकलव पक्षे कावागाव अशास्त्रिव ठाई हव नोरावे। तेंत्लोकव मनव शास्त्रिरे देहाव अशास्त्रिथिनि आत्माई दिवे। तेंत्लोके इसात कामना व्यासना त्याग करि मनते निज तपत्ताव आसन पाति सिद्धिव द्वाराव मृक्तिल होत्ता समय अपेक्षा करि थाके। कावाव वज्रने तेंत्लोकव देहाव बत्ति उठाव। विचावके असत्यव सूत्र लैल ये विचाव . करि बद्दी-शाल उठाई दिवे, तेने वस्त्रीशाल एदिन उवि थाव एह विश्वास तेंत्लोकव द्वाराव अट्टल। अहिंस मृक्तव बद्दी लेनानी सकलव

आर्द्ध-अन्तर्राष्ट्रीय प्रयोग नहय। तेँत्लोकव अटल विश्वास “प्रकाश नहले आनन्दव आच्छावल, साम्य-हैजौ-साधीनता सराय निफल।” बद्दी अरहात्तो तेँत्लोकव मन कोनो बाले अथिव नहय। एकनव दानो तेँत्लोके हात पाति लव जाने। “मुक्ति एवि एकनव दान, हव षे नोऽत्तावे एको आन”—एইकथा तेँत्लोके निर्विकाब चित्ते विश्वास कवे। काबाब शृङ्खलेह तेँत्लोकव भौत्तन शृङ्खलित कवि डोले। डेने शृङ्खलित जीरनेह तेँत्तेह कवि द्वर्गव द्वर्गाव है पवे।

काबागावत तेँत्लोके भोग-विलासव कोनो वस्तु निबिचावे। आज्ञाह पवमानन्दव सफुवाटि मेलि दिये। तातेह अफूबस्तु आनन्द बै शाव। एह काबणेह बद्दी अरहात्तो तेँत्लोके आनन्द-उत्सवं उपज्ञेग कविछिल। विजयाव दिना शक्ति-अर्चनात निञ्ज “बक्त”-जडा याचिछिल। लक्ष्मीपूजाव दिना कव पाबिछिल—“नहय बद्दिनी आक जल्ली डाबत्तव।” कव पाबिछिल, “शामा! आजि तुमि बक्ताकाली है जगत शामला कवि तोला।” अहूत्तर कविव पाबिछिल दीपालिव दिना बाहिबे भित्तवे यि हुवा जुह जलिछिल तावेह शिखावोव ग्राणत पोहव पेलाह शिखाह शिखाह सोमाल। विहव आनन्द-उत्सव थोरा-लोरा, श्रीति-स्रेह, काबाब द्वर्गाव पाव है अह-योरा कविछिल। काबाब बजने बाहिबे भाइ-डनी सकलव विहव श्रीति-स्रेह, पिठा-पनावगवा बक्षित कविव पवा नाछिल। हात-भवि बद्दा बद्दीशालत्तो यात्-पूजा चलि आछिल। तातेह मुक्ति-शश्व ग्राणत बाजि उठिछिल। विश्वासी सकले तात मुक्तिस्नानव संकल लोरा याज्ज्वेह मुक्तिनाथ आहि ग्राणत देखा दिये।

अहिंस युक्तह आर्द्ध आमाव—काबागावत्तो एह विश्वास बद्दी गेनानी सकलव अट्टूट आछिल। अहिंस युक्त शाधीनता लाभ एव्वे जाबत्तव

অয়োধ্যা বাণী, এই কথা তেওঁরোকে সাবোগত করি লৈ বিশ্বাসেৰে
সেইদিন অপেক্ষা কৰি আছিল। যুদ্ধক্ষেত্ৰত তাৰ অগ্রপ ব্যতিক্রম
হলেও কৰ্ত্ত অশ্বথামা সিংহানকৈ বাছিব নোৱাৰিলেন্ত, বণ্ব মৃগনীতি
ৰে ধৰ্ম যুক্ত কৰা ভাবতে এই আদৰ্শ কেতিয়াও নাগাহৰে। শক্তিশীঁষ
সিক্ষান কামৰূপ ভূমিৰ ডেকা-গাঁড়কৰ দলে যে শক্ত শক্ত বন্দুক কামান
বৃক্ত পাতি লগে, জেলৰ ভিতৰতো অমাঞ্চলিক লাঠী চার্জিং দিনাও
সেই শক্তিৰ সংযোগ দেখুৱাব পাৰিছিল।

বারাগাবৰ সকলো শ্ৰীকাৰ বন্ধনৰ মাজতো সেৱকবৃন্দই আচ্ছাবল,
প্ৰাৰ্থনাৰ অলোকিক শক্তিৰ কথা পাহৰা নাছিল। মহাজ্ঞাৰ অনশন
ব্ৰতৰ সময়ত দৈনিক প্ৰাৰ্থনাত সেই বিশ্বাস আৰু নিষ্ঠা প্ৰকাশ পাইছিল।
৮কমলা মিৰিৰ বাপুজীলৈ ঐকাস্তিক শক্তিৰ পৰাকৰ্ষা দেখা গল।
সেই ২১ দিন তেওঁ পৰিত্বাৰে স্বতা কাটি, এসাজ লৰোণ বি তৃষ্ণি
পাইছিল। ৮কুশল কৌৰবৰ ফাটিব হৃকুমত ব্ৰিঘ্যান হৈও সেৱক
বৃন্দই তাত তেওঁৰ অমৰ জীৱনকেই দেখা পালো। আগন্তক ফাটিব
জৰীডালত নামৰ মলাণ্ডি গুটি দিলো। নাম-কৌৰণত তেওঁৰ কৰ্তৃত
শক্তি বঢ়ালো। তেওঁ ফাটি-কাঠিত উঠিবলৈ ষাঠতে অগ্রে। অধিৰ-
অবিৰ নহৈ এই শক্তিৰ বলতে “পাৰ কৰা বঘুনাথ সংসাৰ লাগব”
বুলি একবকম দো-শৰীৰে বৈকৃষ্ণ প্ৰয়াণ কৰিলো।

আক্ষয়বীক্ষাবো স্বৰূপ এই ঠাইৰ সবে আৰু ক'তো হব নোৱাৰে।
নিজৰ ভূগ-ভাস্তি, আক্ষয়ৌৰবণ্য সকলো কথা বলী অৱহাত
ফটকটায়াকৈ চকুৰ আগত দেখা দিয়ো। মনক কাৰুতি-মিনতি কৰি
কৰব যন যাম আৰু যেন লটি-ষটি কৰি লৈ রহয়বে। সপ্তস্তো তপস্তাই
অনন্তৰ শুক্তি সাধন কৰিব নোৱাৰে। বলী ‘শাল’ত মুৰটো স্বয়াই
আঘাৰ বলিদান দিব লাগিব। সাধীনতা দিনে ধৰ্ম-কৰ্ত্ত একোৱেই

ନାହି—କାବାଗାବତ ସେନ ଏହି ସାଂଗିକେଇ ଶୁଣା ସାର । ପରାଧୀନ ଦେଶର
ଶତ-ଶତିବ, ସତ୍-ଥାନର ପରିଜ୍ଞାତା ବକ୍ଷା ଉପରେ । ସାଧୀନ ଦେଶର ଧୂଲିତେଇ
ଗମ୍ଭୀରାନ ହୁଏ, ଦେଶର ଏହି ଶର୍ମ-ବାଣୀ କାବାତ ନିବସ୍ତବେ ଶୁଣା ସାର । ଏହି
ବିଳାକ ସତ୍ୟାର୍ଥ ଶ୍ରୀକାଶ କାବା-ଜୀବନତେଇ ହୋଇବା ସଜ୍ଜା । କାବାତେଇ
ଜୀବନର ଫଳ ପ୍ରାପନ ଯାଜ୍ଞେରି ଫୁଟିକର ଧାରେ ବୈ ସାର । କାବାତେଇ
ଜୀବନର ଜିବେଣୀ ସଜ୍ଜମ ହର ।

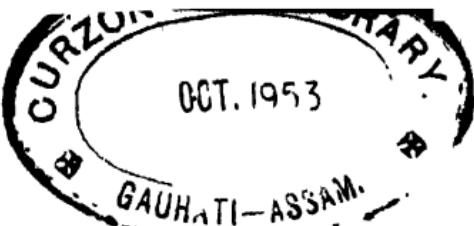
କାବାବବଣର ସମୟର ସେତେକବୁଦ୍ଧି ଡିଡ଼ିତ ପିଙ୍କା ଜିଜିବିତେଇ
କାନ୍ଦାକ୍ଷୟ ଯାଲା ଉପେ । ଏହି ଜିଜିବିତେଇ ଡିଡ଼େଖିଲୋକେ ଶୁଣେ ସେନ—
“ବାଜିଛେ ନୃତ୍ୟ ନର ବୃଦ୍ଧାବନତ” ।

ଏହି କାବାଗାବତେଇ—

“ଜିଜିବିତେ ମୁଖବିଲ ତେଉଁ ବଢା ଫୂଲ
କୀଇଟିଆ ମଦାବତ ମୋର ଜୀବନର ;
ଦେବତା କୁକୁତ କ'ତୋ ନାଲାଗେ ସଦିଓ
ଧାକିର ତଳତ ପରି ମାତୃ ଚବଣର ।”

ବନଭେଟୋ ଅମ୍ବ,
୩୧ ମାର୍ଚ୍ଚ, ୧୯୪୭ ଜନ }

ଶ୍ରୀନୌଲମଣି କୁକଳ



জেল সংস্কারণ বিষয়ে একেবাৰ

“জিজিৰি”ৰ পৰিচয়ত ১৯৪২ চনত ফাটকত কয়লী বিলাকৰ
জীৱনৰ চিৰ এটি আৰু দেখুৱা হল। নিজে পৰ্যাবেক্ষণ কৰি সেই
সময়ত যি দেৰিলো তাৰ পৰা ঘোৰ মনত মৃঢ় ধাৰণা অয়ল ষে
জেলৰ আয়ুল সংস্কাৰ হোৱা উচিত। সমাজত নীতি-বিগৃহিত কাম
কৰাৰ বাবেই তেনে লোকক ফাটকত আচূতীয়াকৈ বধা হয়। তাৰ
উদ্দেশ্য তেনে লোকৰ চৰিত্রত বধাসম্ভৱ পৰিস্থিতিৰ আনি
সমাজত স-সমাজে আকো ঠাই লৰ পৰা অৱস্থালৈ অনা। আছাৰ দেশৰ
জেলখানাত সেই আৰ্দ্ধ কফৰতী কৰাৰ চেষ্টা দ্বত থাওক, ফাটকত
তেনে লোকক আৰু হীন-চৰিত, নিৰ্মল নিষ্ঠুৰ আচৰণত সিদ্ধত কৰি
বাহিৰলৈ পঠোৱা হয়। ফাটকত শাৰীৰিক যজুণা ভোগতকৈ মান-
সিক আৰু নৈতিক অধোগতি আৰু বেঁচ মাৰাঞ্চক কৰা। ইয়াৰ
নিৰাকৰণ কৰাই প্ৰথম সংস্কাৰ কাৰ্য্য হোৱা উচিত বুলি ভাৰো।

অপহৰণ, প্ৰাণবন্ধ, ডকাইতি, নাৰীহৰণ, বলাঁকাৰ, সাম্প্ৰদায়িক
সংঘৰ্ষ, আইনভঙ্গ, মুটপাট আদি সমাজ বিবোৰী কাম কৰা গোককেই
ফাটক ঝাঁঠি আদি শাস্তি দিয়া হয়। এই শাস্তি তিনি একাৰে
বিয়া চৰ—প্ৰতিশোধ যুদ্ধক, প্ৰতিবেধ যুদ্ধক বা সংশোধন যুদ্ধক।
বৰ্জমান সত্ত্ব অগতে দণ্ডবিধি আইনবিলাক বৈজ্ঞানিক মৃষ্টিকৰ্তীৰে
চাই, জেলখানাটো সংশোধনৰ ঠাই হোৱা উচিত বুলি ধৰিছে।

ইংৰাজৰ আমোলত আছাৰ জেলখানা বিলাক প্ৰতিশোধ
লোৱাৰ ঠাই আছিল। ফাটকিয়াল বিলাকক মাজহব শাৰীৰ পৰা
নথাই আনি পশ শ্ৰেণীত পৰিণত কৰি আকো সমাজত উৎস মেলি

দিয়া হয়। পশ্চব দুবে ধৰা, পশ্চব দুবে খোঁড়া, পশ্চব দুবে গাঁতে
বেমাৰ খেদোঁড়া, পশ্চব দুবে ইটোৰ প্ৰতি শিটোৰ ব্যৱহাৰ, পশ্চব দুবে পদে
পদে টাঙ্গোন খোঁড়া—এৰে প্ৰতিশোধ নীতিত প্ৰস্তুতি জেলৰ কাহিনী।

জেলত আহাৰ-পানী, ঔষধৰ ব্যৱহাৰ, কানি-কাপোৰ, খোঁড়া-মেলা,
শৌচাচাৰ আদি কামৰ সকলো প্ৰকাৰৰ ব্যৱহাৰে অতি পালমৰা
বিধি, অকল সেমে নহয়, তাক ছিয়া-মেলাৰ প্ৰণালী আৰু শোক-
লগা। জেলত দীতৰ আৰু চকুৰ বেমাৰ হলে ফাটকিয়ালে নিজ
খৰচত বাহিৰৰ ডাঙুৰ হতুৱাই এই দুই বেমাৰ চোৱাৰ পাৰে।
ইয়াৰ অৰ্থ কি? অৰ্থাৎ জেলৰ পৃষ্ঠানৈ খাচই এই দুটা বেমাৰ
সহজে আৰে। গতিকে অৱশ্যকতাৰী এই দুটা বেমাৰত বেছি ভাগ
কথনীয়ে ভূগিবই। চিকিৎসাৰ সেই ব্যয় চৰকাৰৰ পক্ষে দুৰ্বল হৰ
পাৰে। তাৰ বাবেই এই বিধান।

জেলৰ শাসন-নীতি আৰু পক্ষতি আৰু ডয়াৰহ বস্ত। ধ'ত
দাবি এটা দিলেও হয়, ত'ত ফটৰ ফটৰ বেঁত; হাজোতিয়ালৰ
লগত কথা পাতিলা, নিজান ফাটকলৈ বলা; তেলৰ ধানীত পাক
যুগ্মি থাই পৰি ঘোঁড়া, সেইবাবে আকো গেলাতে টেঁড়া খোঁড়া;
গধুৰ বোৱা এটা অ'ব পৰা তলৈ নিউতে বহি ঘোঁড়া, আকো
বেঁত খোঁড়া। জেলৰ বাঙ্কনি কোন? খুনি, ডকাইতি, বলৎকাৰ
কৰি ১০।১২ বছৰ ফাটক খোঁড়া কঢ়াৰী। বাঙ্কনি কামত বেছি দিন বেহাই
পোৱাৰ আশাত অনেবিলাক ফাটকিয়ালে ধাটি-লুটি কোনোমতে
এই কামত সোমাৰ। গতিকে জেলৰ ভাত-পানীও ভাঁধেৰচ হয়।
ইফালে একোজন ভাল মাঝহেও দৈৱছৰ্বিগাকত হঠাৎ একোটা ডাঙৰ
ঘটনা ঘটাই এইবৰে বছ বছৰ ফাটকৰ কথা ভাৰোতে যুৰ দূৰাই
খোঁড়া অৱহাত বেছি দিন বেহাই পোৱাৰ আশাত মেতৰৰ কামে।

কবিতালে আগবঢ়ে। তেনে কয়লীর নিজের উপরত ধিকাব আৰ
অধোগতি কিমানদুৰ হব পাৰে সেই কথাও তাবি চাবজীয়া।

ইফালে খুনি শকাইতি কৰা কয়লীয়েই কেইবছৰ মানৰ পাঞ্জত
ফাটকিয়ালৰ উপরত কৰ্তৃত কৰা সাফারাৰ আদি কামত দিয়া হয়।
অৰ্থাৎ বাপক ছাগৰ বৰীয়া দিয়া হয়। জেলৰ কৰ্ণচাৰীসকলেও জেলৰ
ভিতৰত সকলো কামৰ তত্ত্বাত্মক প্রায় এনেবিলাক ফাটকিয়াল
আৰু সহজোৱত পৰি সমানে নিষ্ঠৰ ব্যৱহাৰ কৰা বাহিৰৰ জামানাৰ
আহিব উপৰত নিৰ্ভৰ কৰে। নিজে পাক একেটা মাৰি গা সাৰে।
তেওঁলোকো। এনে পাবিপাৰ্থিক অশংকাত পৰি প্রায় ফাটকিয়ালৰ দৰে
হৈ পৰে। গতিকে আচৰণো সকলো ঔকাৰে লৱচৰ হয়।

মোৰ বোধেৰে এতিয়া আমাৰ স্বাধীনতাৰ বিটো আৰম্ভ তাত
খাপধোৱাকৈ গৱৰ্ণমেন্টৰ বিভাগীয় শাসন-নীতি আৰু প্ৰণালীৰ আমূল
পৰিবৰ্তন হব লাগিব। পুলিচৰ পূৰ্বৰ মনোভাৱ আৰু অভ্যাস দুৰ হৱলৈ
ঘিৰবে পুলিচৰ নামটো পৰিবৰ্তন কৰি 'শাস্তি সেনা' বুলিলে তেওঁলোকৰ
মনৰ গতি শাস্তিৰ ফালে বেছিকৈ ঢাল লব বুলি "লাল পাঞ্জবি"ৰ লগত
অতীতৰ বিবিলাক ভাব মেৰপাক থাই আছে তাক গুচাবলৈকো এই
পাঞ্জবিটো গুচোৱা দৰকাৰ বুলি ভাবো। জেলতো তেনে কিছুমান—
দেখোতে সাধাৰণ ষেন লগা—কথাৰ পৰিবৰ্তন হোৱা উচিত। ফাটক,
ফাটকিয়াল, কয়লী এই নামবিলাকৰ ব্যৱহাৰ তুলি দিব লাগে। তাৰ ঠাইড
চৰিত্ৰ সংশোধনৰ লগত ধোৱা শৰুৰ ব্যৱহাৰ হলে ফাটকিয়ালসকলৰ
মনৰ গতিও ভালৰ ফালে ঢাল লব। এইবিলাক কথা মনোবিজ্ঞানেও
সমৰ্থন কৰিব।

ফাটকিয়াল সকলক চৰিত্ৰভূত হোৱা বাবে কেফল আটক কৰি
বখা হৈছে, চৰিত্ৰ সংশোধন হলে আকো বাতে সমাজত পূৰ্বৰ ঠাই পাৰ

সূচী

ক্রিতাব নাম	পিঠি
১। জিজিবি	১
২। কাতি বিহ	২
৩। বিজয়া	৪
৪। খোলা কোরাগাঁৰ	৫
৫। ভিতৰ শোমালো	৬
৬। বন্দিনী অননী	৭
৭। মহালক্ষ্মী	১০
৮। সেৱকবুল	১১
৯। সজাৰ পঢ়ী	১২
১০। বাঁধৰ শৰ	১৩
১১। পোৱাতৌ বাধিনী	১৪
১২। অশাস্ত্ৰি ঠাই	১৬
১৩। পায়াণী	১৭
১৪। বন্দীৰ বিচাৰ	১৮
১৫। আৰ্�শ আমাৰ	১৯
১৬। অধিৰ নহিৰ মন	২১
১৭। বিচাৰ আসন	২৩
১৮। বছনৰ ছান	২৫
১৯। পৃষ্ঠলিত জীৱন	২৭
২০। কাৰাৰ ছায়া	২৮

କବିତାର ଲାଭ

ଶିଖି

୨୧। ଅମୁଦମ୍ଭ ଆନନ୍ଦ	୩୧
୨୨। ଶକ୍ତି-ଶୀଠ	୩୨
୨୩। ଅହିଂସ ଯୁଦ୍ଧ	୩୪
୨୪। ମୁଣ୍ଡିର ପଥ	୩୫
୨୫। ଶ୍ରାମା	୩୬
୨୬। ଶୌଗାଲି	୩୭
୨୭। କାକୁତି	୩୮
୨୮। ମାତୃ-ପୂଜା	୩୯
୨୯। ସ୍ଵପ୍ନରେ ରିଟେକ୍	-	...	୪୦
୩୦। ତପଶ୍ଚା	୪୧
୩୧। ସ୍ଵାଗତମ	୪୨
୩୨। କାବ୍ୟର ସମ୍ମାନ	୪୨
୩୩। କାବ୍ୟ ମୋର ଜୀବନର ଧାରା	୪୪
୩୪। ବ୍ରତୀ ମହାଶ୍ୟା	୪୬
୩୫। ସେବା ହଳ ଆଜି ମାତୃ-ପୂଜାର	୪୯
୩୬। ମୁଣ୍ଡବିଲ	୫୫

—

অগ্নিময়ী জ্বালাময়ী বিদ্রোহৰ বক্ষি-জলাই,
স্বদেশৰ স্বাধীনতা মন্ত্ৰ জপি জপি,
আজি এই জীৱনৰ বিয়লি বেলিকা
কাৰাৰ এই নতুন জীৱন
বন্দীৰ এই নতুন ভূষণ,
ললা আকোৰ্ণলি দেৱদত্ত বৰ বুলি,
হাহি হাহি কাৰাৰ শিকলি ।

— হেম বকরা ।

জিজ্ঞেষি

সোমালো সক্ষিয়া আহি কাৰা-ভৱনত
গুনো মাথো চতুর্দিছে জিজ্ঞেষিতে কিহে :
কিহৰ জিজ্ঞেষি মই কৰ পৰা নাই
দেখো মাথো অঙ্ককাৰ বিকট হাহে !

ভিতৰ সোমাই গুনো যিহকেই
মাঘাপুৰী যেন লগা হ'ল এথস্তক ;
হঠাতে পোহৰ দেখো মনৰ মাজত
কোনে যেন দীক্ষিত কৰিছে সাধকক !

আৰাধিলো ছয়াময়া কৰি দেখা দিয়া
দেৱতাক—নেদেৰিলো আৰু ঘূৰিবাৰ ;
সাষ্টাঙ্গ প্ৰণাম কৰি উঠিলো ষেতিয়া,
উঠিল ভিডিত বাজি জিজ্ঞেষি এধাৰ !

କାତି ବିଛ

ମୋର,

ତିନି ବିହତିର ଦେଶ !
କାବ୍ୟକଳ କବି
ପାବିବାନେ କେବେ
ନିବ ଆନନ୍ଦର ଲେଶ !
କାତିର କଡ଼ାଳୀ ବିଛ
ଆହେ ଚୋରା ସୌଭା
ଭୋଗଜବା ଲାଇ
ଭାତି କାବାଗାଳ୍ ବେହ !
ମେଉଜୀଯା ପଥାରର
ବନ୍ତି ଶାବି ଶାବି
ଆହି ଆଲୋକିଛେ
କୁଞ୍ଜି କାବା ଚରନର !
ଆଚୀର ସେଣ୍ଟିତ କବି
ହୃଦୟେ ହୃଦୟେ
ଦେଖେ ଜୁଲି ଆଛେ
ଆଧୀନ ଆଲୋକପୂର୍ବୀ !
ଦେହାଲର ସିପାବତ
ତୁଳସୀ ଗୁବିତ
ବଞ୍ଚିଗଛ ଅଲେ—
ଚିମିକିଛେ ଅନ୍ତବତ !
ପର୍ବାବର ଚଗାବୋବ
ବଞ୍ଚିବ ଭାପତ
ପବି ଆଜି ମବେ ;
ଯବିଛେ ମାଘାଓ ମୋର !

କାତି ରିହ

୧

ଭାଲ-ଖୋଲ ମୁନଦର
ଏତିଥିନି ଉଠେ
ଆଚୀବ ସିପାବେ—
ଶିଖା ସାଜେ ଭିତରର ।

କାବାଇ ଆନନ୍ଦ-ଯେଳା
କଂସର ଭୟତ
ମୁହଁତା କୁଣ୍ଡଇ
ଇରାତେ କବିଛେ ଖେଳା ।

ଅଗରାଥ କ୍ଷେତ୍ର କାବୀ,
ଜାତି-ରାଜ-ଧର୍ମ
ସମସ୍ତୀ ହ'ଲ—
ଡୋଗକୋ ସାଚିବ ପବା ।

କାବା ମକତୋ ସେ ଶୁଣି
ଆଜାନବ ଧନି
ଉଠେ ଏକୋବାବ
ବନ୍ଧୁମର ମତ୍ୟ ବାଣୀ ।

ଶିକଲିବେ ବକ୍ଷା ହାତ—
ସିଓ ମୁକ୍ତ, ଗଜ
ପୁଣ ଅର୍ପଣତ—
ଶକ୍ତି ପୁଜା-ଅର୍ଚନାତ ।

କାବା ବନ୍ଧନର ଠାଇ
ନହୁ—ମୁକ୍ତିବ
ଆନନ୍ଦ ଉଦ୍‌ଦେଶ
ହିରା ତଳି ଭେଦି ଧାର ।

୧୩ କାତି—୧୮୬୫ ଶକ ।

বিজ্ঞা

মাটিৰ প্ৰতিমা	নোহোৱা ইৰাবু
দিবলৈ ঘূৰি বিসৰ্জন ;	
অভয়া বৰমা	হই দেখা ছিছ।—
কৰা কাৰাদাৰ উন্মোচন।	
তোমাৰ সম্মান	শক্তি উপাসক
হই অপেক্ষিছে অসুবৰ	
বধ, তৰ দশ	ভূজৰ শক্তিত—
মকলৰ বাবে জগতৰ।	
আক যে নিদিবা	লেৰেলি ধাৰলে
অ-পৰাজিতাৰ বসাল ঠাবি ;	
অভয় কৱচ	বাহি লি অযৱ
ষাঢ়া কৰোৱা ভৱহাৰী।	
বিদ্যায় নিষিণ্ঠ	ষেতিয়ালৈকে
অ-সুৰ নকৰা সংহাৰ ;	
এতি ঘটে ঘটে	ধাকা শক্তিক্ষপ।—
কৰা সুৰ-শক্তি সঞ্চাৰ।	
বিজয় যাত্রাক	কৰা আজি শুভ
পথ নিষ্কণ্টক কৰি দিয়া ;	
সম্মানে তোমাৰ	চৰণত আজি
ষাঢে নিজ বজ-জঠা—নিয়া।	

খোলা কাব্যগ্রন্থ

খোলা কাবাগাব	তুরাব তোমাব
ভক্ত সকল গল,	
আবস্তে মাতৃব	পূজা ভিতৰত
আবত্তি সময় হল।	
পাচ পৰি বলো	সঙ্কিয়ালৈকে—
আহিছে আক্ষাৰ হৈ;	
পলম নকৰা	ঘোৱা ততালিকে
থাকিব নোৱাৰো বট।	
লোৱাৰ শলখা!	শাৰী শাৰী হোৱা,
বাট দিয়া ষাবলই;	
আহিছে নিষ্ঠাবে,	দেৱ পৰিশন
মন্দিবত পাবলই।	
বাহিবত শনো	তোৱাৰ হুমুৰ
পাশাণেবে গঢ়ি খোৱা;	
ভিতৰ সোমাই	চাঞ্চ দেখো তাতো
প্রাণৰ স্পন্দন দোৱা।	
অক ফাবাগাব	বাহ তমসাৰ
সৎপথ বিচাবিছে;	
খাপনাৰ কাৰ	চাপিলো যিমান
লিমানে পোহৰ দেখিছে।	

ੴ ਰਾਮ ।

ভিতৰ সোমালো

ବାହିବତ ସରନିକା ପରି
ଭିତବତ ଦେଖୁଣାଳେ ଶୂନ୍ୟ,
କିମୋ ବୈକୁଞ୍ଚିତ ଠାଇ ଏକୋତେହି କୁଠା ନାହିଁ
ଆଛେ ଅର୍ଜକାବ ଡେମ କବି
ହୃଦୟର ଆଲୋକ-ପୁଣୀ ।

ଦେଖୋ ସତ ସାଧକର ମଳ
କବି କାବ୍ୟଗାବ ଭୀରୁଷାନ,
ଦୃଃସାଧ୍ୟ ସାଧନା କବି ତପଃକ୍ଲିଷ୍ଟ ଦେହ ଧବି
ଚିତ୍ତ ଆଛେ ମାତ୍ରର ମନମ—
ମୋକଳାବ ଦାମ୍ଭ ଶୃଘନ ।

বেদী পাতি পূজাৰীসকল
বহি আছে শোভি যত্নান,
উঠে আৰতিৰ কনি মুক্ত আকাশত শনি
দৈত্যবাণী—“নহয় নিফল
মহাদেৱ, হে সাধক হল।”

ভাগবিন্দুগৰি আঠিছিলো
 সাৰে থাকি বব নোৱাবিলো,
 মহানিজ্ঞা হল মোৰ— সাৰপাই চকুয়োৰ
 মোহাবিলো—মেথো কাৰাগাৰ
 যেলি দিলো—মুক্ত দুৱাব !

ବନ୍ଦିନୀ ଜନନୀ

ବନ୍ଦିନୀ ଜନନୀ, ଆଜି କାବ୍ୟଗାବ
ଭବିଲ ମାତୃତ ସଙ୍ଗାନେବେ ;
ଅଗତ୍ତବ ଆଜି ପୂର୍ବିତା ଜନନୀ
ଆହିତା ସଙ୍ଗାନେ ଯହେ କିମ୍ବବେ !
ବାଜ-ବାଜେଥବୀ ଆହିଲ ଏମିନ
ତ୍ରୈତ ଜନନୀ ଅଗତ୍ତ ଯାଜେ ;
ଲକ୍ଷ ମଣି-ମୁକ୍ତା ଯାବ ଶିବେ ଶୋଭେ,
ଶୋଭେରେ ଆଜିର ବନ୍ଦିନୀ ସାଜେ ;
ହିମାଳୟ ଦରେ ଯାବ ଉଚ୍ଚ ଶିବ,
ନ୍ୟାୟରେ ପଥାଲି ଆଜେ ଚବଣ ;
ବିକ୍ଷା ନୌରାତଳ ବୁଝୁତ ଶୋଭିଛେ
ଯାବ ଆଜି ହଲ କାବ୍ୟବରଣ !
ଜନନୀର ପର-ଧୂଳା ପରି ଆଜି
ବନ୍ଦୀଶ୍ଵର ହ'ଲ ପୁଣ୍ୟଧାମ ;
ବାଟିଛେ ନିର୍ଠାବେ କୋଟି ସଙ୍ଗାନେ,
ମାତୃ-ଚବଣତ ସେଣା ନିକାମ ।
ଶୃଦ୍ଧିତା ଆଜି ସହିଓ ଜନନୀ,
ବକ୍ଷାବି ଉଠିଛେ ମୁକ୍ତ ପ୍ରାଣ ;
ସଙ୍ଗାନର କଷ କୋଟି କର୍ଣ୍ଣତ,
ତମା, ବାଜି ଉଠେ ତାବେଇ ଗାନ ।

· କାତି ।

মহালক্ষ্মী

দুর্ঘাবে দুর্ঘাবে আজি বস্তি-শলিত।
অসাই, উধিয়ী আই দেখা দিব বুলি,
ঘবে ঘবে বাট চাই থাকিব সকলো,
আস্তিকেবে মচি খই দুরাব নলি।
অৰ্গৰ পোহৰ আহি পূণিমা বাতিত
উজ্জ্বলাৰ দশোদিশ, আজ্ঞাৰ খোটালি
পোহৰত চকু দিলে চকু বোঝা হয়,
প্রাণতো জলিৰ তাৰে স্বিঞ্চ দৌপারনী।
ভাৰতৰ মহালক্ষ্মী আজি ষে কাৰাত,
হনুমৰ ভাগা-চন্দ্ৰ কীণপ্রত হল ;
ত্ৰীহীন পূণিমা বাতি, মলিঙ্গন মুখ,
কাৰা-দুৱাবত আছি শুক হৈ বল।
তথাপিতো উষ্টাসিত হৃদয়ে,
হইছে পূণিমা আজি অপ-লোকৰ ;
সাৰ পাই ছিঠকত দেখো মুক্তকাৰা—
নহয় বলিনী আৰু লক্ষ্মী ভাৰতৰ।

ଶେରକବ୍ଲନ୍ଦ

ଦେଖୋ ଜନନୀର ଶେରକବ୍ଲନ୍ଦ,
ଗାଇ ସାଧୀନତୀ ଜୟବ ଗାନ,
ତୋଳେ ହୁନ୍ଦିତ ପ୍ରତିଧରନି ତାବ,
ଅଗାଇ ହୃଦୟ ସାଧୀନ ପ୍ରାଣ ।
ମେରାବ ମାଜେଦି ପୋରା ତ୍ୟାଗଧିନି
ଯାଚେ ଆଜି ମାତୃ-ଚରଣତ ;
କାରାବାସତେଇ ମନ୍ଦିର ତୁଳିଛେ—
ପୂଜାବ ଧାପନା ହୁନ୍ଦିତ ।
ଧୂ-ଦୀପ-ଗଙ୍ଗ, ବଞ୍ଚି-ଶଲିତା,
ଏକୋବେଇ ତାତ ନାହିଁ ଆସୋଇନ ;
ବିକ୍ଷି ହତ୍ତେବେ ମାଥେ ଅର୍ଜନା କବିଛେ,
ବୁଝି ପିହିଛେ ବକ୍ତ-ଚନ୍ଦନ ।
ମନ୍ଦିର ସାଧନା କବୋତେ କବୋତେ,
ଶବୀର ପତନ ହଲେଓ ହସକ ;
ଶାଧୀନତା—ନାହିଁ, ମୃତ୍ୟୁବରଣ—
ପାଞ୍ଚଅନ୍ତ୍ୟ ଆଜି ବାଜି ଉଠକ ।

সজাৰ পথী

ପ୍ରାଣବ ପଦ୍ମିଟି ଯୋବ	ସଜ୍ଜାତ ଆହୁତ ହ'ଲ
ଉଦ୍‌ବିବ ନୋହାବେ ଦେହି ଡୌକା କୋବାଇ ;	
ଲୋହବ ଶଳଧାରୋବେ	ଚକ୍ରବ କୁଟାବ ଦରେ
ପୀଡା ଦିମେ—ନ୍ରିଙ୍ଗ ଦୃଷ୍ଟି ଲୋପ ହଇ ଯାଏ ।	
ସଜ୍ଜାତ ଶୋମାଇ ଥାକି	ଉଦ୍‌ବିବ ନୋହାବି ମନ
ହୈ ଉଠେ ମତଳୀଯା ଏକୋ-ଏକୋବାବ ;	
ଯିଛାତେ କୋବାଇ ପାଥି	ନହବା ଦୂର୍ବଳ ପଥୀ
ଏଦିନ ମୁକଳି ହବ ସଜ୍ଜାବ ଦୁର୍ବାବ ।	
କ'ତ ପାବା ବନଫଳ	ଶୀତଳ ନିଅବା ଜଳ,
କ'ତ ପାବା ଆକାଶତ ଉବି ଫୁରା ସ୍ଵର୍ଥ ;	
ପିଞ୍ଜବାତ ଯିବା ପୋରା	ତାକେ ଥାଇ କିବିଲିରା
ଦେଖିବା ପରିବ ଓବ ବନ୍ଧନବ ଦୁର୍ଥ ।	
ସଜ୍ଜାବ ପଦ୍ମିଟି ହଲା—	ଏକୋ କଥା ନାହି ତାତ
ଚକୁତ ପରିବ ପଦ୍ମି ! ଆକାଶ ପଥତ	
ବିହଗ ବିହଗୀସବେ	ଆଲାସତେ ବିହବିଚେ—
ତାକେ ଚାଇ ପାହବିବା ନିଜେ ଆନନ୍ଦତ ।	
ଭାଗିବ ସଜ୍ଜାବ ସେଇ	କେଇଭାଲ ଶଳଧାଓ
ଏଦିନ ଉଦ୍‌ବିବା ତୁମି ନିଜେ ଆକାଶତ ;	
ନାଥାକିବ ଚିନ-ଚାବ	ତୋମାବ ଏଇ ସଜ୍ଜାଟିବ—
ଗାଇ ସାବା ମୁକ୍ତିଗାନ ବିମାନ-ପଥତ ।	

ব্যাধির শব

ব্যাধির শবত পৰিল শুকৰ
এবললৈ তাক সহিব পাৰি;
মইনা কুলিক বিজ্ঞিলে সি শবে
তেজিয়া কদাপি সহিব নোৱাৰি।

মইনা কুলিক সজ্জাত আটক
কৰি বাখিলেও আহাৰ খিনি
গাঁথীৰে পানীয়ে দিবই লাগিব—
নোৱাবে হব সি চুৱা পাতনি।

‘বাধা-কৃষ্ণ’ নাম মইনা কুলিক
বিষয়ধে শিকালে হুশুৱায়;
মাজ নিশাখন হদুৱে মাতিলে
ব্যাধিবেই মাত শুনা যায়।

সজ্জাত মোমোঢ়া মইনা কুলিক
নোৱাৰিবা ব্যাধ শিকলি দিব,
সেউজী বনত মইনা আকো
উৰি কুগনিত শুবেবে গাব।

খিল কৰিয কুলিয়ে আকো
চিৰ-বসন্তৰ বাতৰি আনি;
দূৰ-দিগন্তৰ মাতকো ওচৰ
কৰি বৰহিব অজিঙা খিনি।

কৰিয পাতিলি শৰালি হালিক
শৰবিক কৰি ব্যাধ ! তই;
জাতে উপজিঃ বাল্মীকী-প্রতিভা—
পাৰিবিনে বাধা দিব অই !

পোরাতী বাধিনী

কাণ পাতি শুন। কাৰাগাৰ !
তোমাৰ যে লোৱাৰ দুঃহাব
কক্ষিবিছে, জিঞ্জিবিছে মৰ্মবিছে
অত্যাচাৰ, অবিচাৰ আহি আঘাতিছে ;
কিপিছে হৃদয় শলধাৰ
একোবাৰ হৈ বাৰ খোজে চুবম্বাৰ !

সারধান দুৱৰী প্ৰহৰী !
ষোড়া আৰু অলপ আঁতবি,
পোরাতী বাধিনী আচে কিপাট মেদিনী,
বাটে-বাটে ঘনে ঘনে মাৰে গোজৰণি ;
নোঞ্জোকাৰা, রুখুচিবা ঘূৰি ,
বাহিবতো খোজগাল থাকিব যে পৰি !

সোমালেহি বাধিনী গৰাল,
মাৰিলেহি একোটা উফাল,
লোৱাৰ শলধাৰোৰ চেপেটা লাগিল,
বই বই পৰালত কিপনি উঠিল,
অদীশাল হল শক্তিশাল—
সোমালেহি বামৰ যে পোৱালী এগাল !

মাতৃ আজি বাধিনীৰ মৰে
 গৰ্বালত সোমাই গোঁজৰে ;
 বধি থাকা বাহিৰত একেো কথা নাই
 নাধাকিযা একেথিৰে চৰুলৈ চাই,
 বাঘযুৱে যদি আহি ধৰে,
 অন্দে-শন্দে ববা মাথো পুতলাৰ মৰে ।

ধন্ত হলা গোৱৰ গৰ্বাল,
 জননীৰ হলা বন্দীশাল ।
 শুইছে বাধিনী আজি গৰ্বাল মাজ্জত,
 নোজোকাবা ষাঠি-জোঁ লই বাহিৰত,
 সাৰ পালে গৰজি উঠিব—
 গৰ্বালৰ সতে জাপ কেনিযা মাবিব ।

৯ কাতি

ଅଶ୍ରୁତିବ ଠାଇ

ନାଟ୍କାବିଦୀ କାବ୍ୟାଗାର ଅଶ୍ଵାସିବ ଠେହି
ଶାଷ୍ଟି ନିଷର୍ତ୍ତାବ ଫଳ ତାତୋ ବୈ ଦାସ ।

ଶାଙ୍କି ସନ୍ଦି ଭିତର
ବନ୍ଦ ହୁ ଅନ୍ତର

କାର୍ଯ୍ୟ କିମ୍ବନୋ ହେ ସୁଷ୍ଟି ଅଶ୍ଵାସିବ—
ବିଚାରୀ ନିଜକୁ ପଥ ମନ୍ୟ ଶାସିବ ।

ମନେ ଶାଖିନେ। କ'ଣ ମେହି କଥା ଡାବ,
ଦେହାର ଅଶାଖି ଧିନି ଆଉଣ୍ଟରା ଲେଖିବା;

କାମନାର ବାସନାର ଠାଇ ମୋହେ କାବାଗାର

କଟୋର ଶୁଭ୍ରାତା ଲହ ଥାକିବ ଲାଗିବ,
ମୋହୂ ମୁଦଳାବେ ଡାକ ନୋହାବେ ଡାଙ୍କିବ ।

সাধনাৰ আছতিবে অগনি জলাই

এটি এটি কবি জাত কামনা পেলাই

যজ্ঞ আবস্থন করা অনুসিদ্ধ হৈ পৰা

ଦେଖିବା ହୋମକ ଗଢ଼େ-ପ୍ରାଣ ଆମୋଦିତ,
ଅନ୍ଧନା ନାପାବ ଘନେ ଆକ ଅଶାସ୍ତି ।

ଅଶାଙ୍କିଯେ କବି ତୋଳେ ସୃଷ୍ଟି ନବକବ
ସୁଜ୍ଞନାର ଠାଇ ହୟ ଅଶ୍ଵିବ ଘନବ ।

ମନତେ ଆସନ ପାତା ନିଜ ତପସ୍ତାବ

ତାତେହୁ ମୁକଳି ହବ ମିଳିବ ଦୁରାବ ।

କାର୍ବାବନ୍ଦ ଦୃଷ୍ଟି ତୁଳି ଲୋରା ତାବପବୀ
ଚକୁବ ଅଞ୍ଜନ ନୌଗାକାଶ ଧନି କବା ।

পার্বণী

শিলেবে অক্ষোধা তোর হিয়া বে পার্বণী !

অদত্তাৰ লেশ থাক নাই ;
কাহাৰ মাজত উঠে হাহাকাৰ ধৰনি,
হিয়া তোৰ প্ৰশি নাষাৰ !

গুজৰে গুজৰে গৌথ কিছু কাহিনী
শিলৰ বেখাত বই ষায় ;
শিবাই শিবাই চলা তেজ গই, তাৰ
জোৰাই জোৰাই গোট ধাৰ !

চতুৰ্ভিশে চাহ তই চকু কড়া কৰি
অট্টইসি সমাৰ মুখত ;
নিতো জলাই আছ লক্ষ লক্ষ কৰা
জুইকুৰা কৰ্তৃতা বুকত !

পৰি তাত জাই হয় চলনৰো কাঠ
পুতিগৰ্জ জাৰৰ স'তে ;
নৰকৰ কুণ্ড পাতি দিছহি হিয়াত
সকলোটি আহ ষায় তাতে !

পার্বণী ! নহৱ আজি কৰাগাব তোৰ
কলুষিত পাপৰ ক্ষতন ;
মুস্তিব সাধকবুলৈ যজ্ঞ আৰম্ভিছে
পাতি তাতে পূজাৰি আসন !

অপিৰে সকলো সুখ-ছুখ ভোগ-ভোগ—
ভৰিছে যজ্ঞৰ কুণ্ড তলি ;
নাষাৰনে—আহতিত দিয়া বিউ দখে—
পার্বণ হৃদয় তোৰ গলি ?

ବନ୍ଦୀର ବିଚାର

ବିଚାରକେ ଆସନ୍ତ ବହି ଲୈ ବିଚାର କିହବ
କବିର, କିହବ ଶ୍ରୀ ଧରି ଲୈ କୋନ ଅମତାବ ?
କିହବ ବିଚାର ହୁ କୋମେ ତାକ କୈ ଛିବ
ସାମ୍ୟ-ମୈତ୍ରୀ-ସାଧୀନଙ୍ଗା ବିଚବୀ ଲୋକର
ଅପରାଧ—ସିଏ ହ'ଲ ଧୋଗୀ ବିଚାରବ !

ସାଧୀନ ଦେଶର ଆଜି ଉଦ୍‌ଦିଷ୍ଟ ପତାକାଖନ
ଯାତ୍ରହତ୍ତା ଦେଶଦ୍ରୋହୀ ବିନେ ଆକ ସର୍ବଜନ
ଥିଲୁ ହୈ ପତାକାବ ତଳତେଇ ଏକୋଧ୍ୟାବ
ସାଧୀନ ଭାବତ ବରେ ଭେଦିଛେ ଗଗଣ—
ମେଘେ ଆଜି ଅପରାଧ ହଲ ଅଗମନ ।

ଭାବିଚା ମହାନ ଆଜ୍ଞା ବନ୍ଦୀ ଆଜି ଭାବତର,
ଶୁକ୍ଳ-ବୃକ୍ଷ-ମୁକ୍ତ ଆଜି ପତାକାତ ତ୍ରିବନ୍ଦର
ପ୍ରକାଶିଛେ ବାହିଭତ,
ଚମକ ଲଗାଇ ଉବେ ଆକାଶୀ ବଥବ,
ଶୋଭିଃଶାୟ ଆଗେ ଆଗେ ବିମାନ ପଥବ ।

ଉଁ ରଲିବ ବନ୍ଦୀଶାଲ ଏମିନ ସନ୍ଦେହ ନାହିଁ,
ସକଳେ ସଞ୍ଚାନେ ପାଦ ଯାତ୍ର କୋଗାତ ଠାଇ,
ଅବିଚାର, ଅତ୍ୟାଚାର ନାଥକିବ କାବାଗାବ,
ମୁକ୍ତପ୍ରାଣେ ମୁକ୍ତବାୟ ସେତିବ ସମାର,
ଜ୍ଵଗତର ପୂଜା ଯାତ୍ର ମୁଖ ଲାଇ ଚାଇ ।

ବିଚାରକ ! ବିଚାରବ ଆଦେଶ କୁନାଇ ଦିଯା
ବନ୍ଦୀର ଶାଶ୍ଵତ ମୋର ଗଢ଼ି ଲାଗ ମୁକ୍ତ ହିଯା,
କାବାବ ବକ୍ଷନ ଯିଟି,
ଆତମାଇ ପିବଲାଇ ପାବ ଯେ ଅଯିଯା—
ପରମ ନକରା ଆକ—ଦିଯା ଶାନ୍ତି ଦିଯା ।

ଆଦର୍ଶ ଆମାବ

ଦେଖୋ ଆଜି କ୍ଷଣେ ସନେ ବିମାନ କେପିତେ,
ବଞ୍ଚିପାତ, ଉକାପାତ ସଥନେ ଘଟିତେ ;
ଚାବି ବୁଟି ଭୀର ଭବ ଆସନ୍ତ ମରିତେ,
ତଳେ-ଓପରେ ମୁଖ ବାକ୍ଷସେ ମେଲିତେ ।

ଇନ୍ଦ୍ରଭିତେ ଆହେ ଧେଦି— କ'ତବା ଲଙ୍ଘଣ ?
ଶକ୍ତିଧେଲ ମାରିବବ ନାହିଁ ବେଳି କ୍ଷଣ,
ଅର୍ଗ ଏବି ଗଲା କେନି ହେବା ଦେଇଗଣ !
ଅନୁବକ ଦେବି କିଯ ଉଠିତେ କମ୍ପନ ।

ଦେରତା ବୋଲାଟ ପାଲା ନବ ମନିଷକ,
ପଦେ ପଦେ ଭୂରା ଦିଲା ଲଗଟେ ନିଜକ :
ଆଜ୍ଞାଯାତୀ ହଲା ନିଜେ ମାରିଲା ଆନକ,
କ'ତ ଠାଟ ପାବା ଲଟ ଏହି କଲକ କ ?

ଅନୁବବ ବାବେ ଥଲା ଯିଥିନି ଗବଲ,
ତାବେଇ ଅନୁବେ ଏନେ ବବସେ ମୁଖଳ ;
ଦେଇବାକ ! କ'ତ ତର ବଜ୍ମୁଟି ବଲ,
କେନିନେ ପଲାଇ ଗଲ ଦେରତାବ ଦଲ !

ଅନୁତ ଗବଲ ଲୈ ଦେରାନୁବ ବଣ
ହେ ଆହେ ଚିବକାଳ କେପାଇ ଭୁବନ ;
ଡୋଗବ ଲାଲସ ବାଢ଼ି ସାର ଅନୁକ୍ଷଣ.
ଇଜନେ ସିଜନେ ପାଜେ ବଧେ ଡେତିକ୍ଷଣ ।

ନିର୍ମଳ ଆକାଶ ଚିବକାଳ ଭାବତବ—
ଉଠିଛେ ଦୁର୍ଗକ ଆଜି ବିଷାକ୍ତ ଦଶବ ;

देवास्त्र युक्त वाहिनी उनिषद
नाहे आक श्वेता नवनावी भावतव ।
देवास्त्र लोहे आजि आर्श आमाव—
कवित लापित अश्वस्त्रिय उक्ताव ;
हृषये हृषये कवि शक्तिव संकाव,
चिनाकि दियाचो शक मानवताव ।

अश्व-मृत्यु घटके आहे मानव औडन
देवताव हवे नोहे चिर अमरण ;
अश्वव शक्ति हृष यृत्यव कावण,
कवा आधो मानवव धर्म आचरण ।

एवि दिवा सवगव कामना एवाव,
शक्तिव श्लेष पवि आको धवाव
वृक्षव त्तेजेवेह बांडली कवाव,
अश्वव वक्त घेन नोलाव एवाव ।

दुर्योधने रेवे भूमि शृचिव आगत,
हल ताव सवाधान कुकव क्षेत्रत,
निमादित पाक्षजय शक्तव माजत,
विजयव आशा कवा धर्म युक्त ।

अश्व-शक्त झेंगेगडो पाशक्तिक वल
प्रकाशेह नोहे धर्म युक्तव खल ;
प्रकाश नहले मानवव आश्ववल—
साम्य-मैत्री-स्वाधीनता सराव निष्फल ।

অধিবানহৰি ঘন

অধিব নহবি বল ! হাত-ত্বি বক্ষা তোব,
পৰেহি মনত আহি কৰবাৰ কথাবোৰ !

ବନ୍ଦୀଶ୍ଵର ଦିଚ ଶାଲି ବୁଝୁଣେ-ପିଟିଯେ ତାଇ,
ଇକାଟି ସିକାଟି କବିତା ଗାୟ ନାହିଁ ଅଛି !

ସମ୍ପଦ ଯେ ନହା ହଲ ତୋର ପୋତାଶାଙ୍କିଲେ,
ଦିଠକଡ଼ୋ ମାଧ୍ୟ ନାହିଁ ଶାହିବିଲେ ଶାବଲାହି ।

ତନୀଏ ଦୁଇବି ହୁଲ, ଲୁହିତର ଡକାବୋର
ଆହିଛେ ଆଫାଲି ଘୋବ ଗବଜନ କବି ଘୋବ ।

বিখাস কবিরি ঘন ! অগতৰ স্মৃতিগতি
পথালি চকুৱে দেখা নায়াম যদিও, অতি
বীৰ-শ্বিৰ আবে গই
আহিবৰ ঢউবোৰ আহিছে সমাজ,
তাত্ত্বেই উঠিছে ঘূৰি তাত্ত্বে মাৰ যাষ ।

আত্মীয়-স্বপ্ন, মন ! আছে আত্মাত তোর
 ছিন-ভিন কবি ছিছে কাবাগাবে দেহাবোৰ ;
 অগতৰ উমসাত চেতনা হেবালে গাত
 আত্মাই আত্মাৰ লগত ধাকিব—
 পৃষ্ঠিব পথত গই ঘূৰি চিনি পাব।

୧୪ ପାତା

বিচাব আসন

অবিচাব অভ্যাসের পঞ্জুতী মেহা লই,
জুইবে হেতালি খেলা খেলিছে সদাস্থঃ
পকা অঠাটো তাবে এদিন উফবি আহি,
নিজব বুকুকে পুবি কবি দিব ছাই।

বিচাব আসন নোহে অস্ত্যাক ঠাই দিয়া,
ধৰ্মবাজ বহে তাত নিজে আগধবি ;
সমান স্থানৰ তেনে বাধিব নোরাবা হলে
উচিত ঘোরাটো তাৰ পৰাই আতবি।

সিপুবীত যমছতে নকবে বিচাববিনি,
ধৰ্মবাজ নিলে বিচাবৰ অধিকাৰী ;
ইপুবীত কোটোৱাল এজনৰ কথাকেই
লব খোজে বিচাবকে সৰোগত কবি।

তাতোকেও আচবিত স্বাধীনতা বিচৰাই
বি দেশত শুকতৰ হোৰ বুলি ধবে,
তাতো বিচাবক আচি বিচাব আসন পাতি
ধৰ্মক চিহ্নাই বিচাবৰ ভান কবে।

জ্ঞান যেতিয়া নবে বিচার তুলামণি,
 নবিল আনিবা শাসন দণ্ডাল ;
 পরিষ ধন্তিত হৈ কেনি সি কোঠাটো টান—
 কাৰ মূৰ কৰি দিব তেতিয়া দুফাল।

শক্তিমন বাজমণি চিকাই অগত্য—
 ধৰ্ম দণি আপে আগে দায় কাৰণেই ;
 তেনে দণ কটোৱালে ধৰে যদিহাতে হাতে,
 হয় তাৰ ব্যৱহাৰ মাথো লাগিবেই ।

আছে তানো প্ৰহোদন আৰু ভোকাওনাৰ,
 মাছকুমি কৃবি আৰি হল কাৰাগাৰ ;
 বিচাৰ আসন পাতি কিহৰ বিচাৰ কৰা,
 চোৱা জননৌঝে কৰে মুক্ত দুষ্টাৰ ।

১৫ কাণ্ডি ।

বঙ্গনৰ দান

ଲଖିଲାବେ ପାଈକେ ନାହିଁ
 ଇମାତେ ବୁଗାଳେ ସେବ ପାଞ୍ଚ ;
 ଏଠା କେନି ଉଟି ଗଲ ଚିତ କ'ତ ପରି ବଲ —
 ଏହିଥୋବ ଏଥା ନାଭାବିବି,
 ଆକ ଯିଛା ଆଶା ନକବିବି ।

তি঳ তি঳ কবি হৰ কৰ
 দেহা তোৰ ধাকিবি নির্ভৰ ;
 সাধনাত ক্লিষ্ট হলে, বজ্জ-অহি গঢ়ি ললে,
 সেৱে অনলীৰ পাঞ্চপাঞ্চ
 অজ্ঞ—হৰ অহৰ নিপাত ।

কাৰাগাৰ বজ্জনব ঠাই—
 ই কথা নজনা তোৰ নাই ;
 বজ্জনতে মুক্তি আছে, মুক্তি সুবে পাছে পাছে—
 মুক্তি এবি বজ্জনব দান
 হৰ যে নোঝাৰে একো আন ।

পঞ্চকূতে বিছে তোৰ দেহা
 ইয়াতেই শেষ হলে বেহা,
 অণমুক্ত হবি তই, পঞ্চকূতে পাই লৰ ;
 য'তে ধাক মুক্তি আয়া লই,
 আহি ধাৰি অঞ্চলমিশই ।

শৃঙ্খলিত জৌরন

ହଁଲ ଆଜି ଶୁଭ୍ରଲିତ କାବାବ ଜୀବନ ଘୋବ,
ପଦେ ପଦେ ଜୀବନର ଦେଖିଛେ ଶୁଭ୍ରଲବୋବ ;
ଶୁଭ୍ରଲା ବିହିନ ହଇ ଜୀବନ ଆଛିଲ ଗଈ,
ଇଞ୍ଜାଳ ତବିଛିଲେ ଚକୁବ ଆଗତ ;
ଘରନିକା ପରିଛିଲ ଭାଓନା ସ୍ଵର୍ତ୍ତ ।
ଉଚ୍ଚଟାଇ ଘିଲେ ଘନେ ଉଠିଛିଲ ମେହା ନାଚି,
କବିଛିଲ ବେହା ଗୈ ସ'ତେ ତତେ ପାଚି ପାଚି ;
ମାଟି ଭାବ ଆନିଛିଲ ଲୋଗ ପାଚି ଭାବିଛିଲ ;
ମୀଟିତେ ଗବାହ ମାବି ମାଇହାଂ ଥନ
ଦେଖିଛିଲ—ତାତେ ଆକ ନାନାନ ବାଞ୍ଚନ ।
ସତେ ତ'ତେ ହାତ ମେଲି ଫୁରିଛିଲେ ଧିଯିଯାଇ
ଭବିଷ୍ୟ ଫୁରିବ ଖୋଜେ ଫୁରିବ ନୋପୋରା ଠାଇ,
ମେଲିଲେଇ ଚକୁଙ୍ଗୋବ ପରେ ଆହି କୁଟାବୋବ
ଶୁନିବ ନୋପୋରା କଥା କାଣେ ଶୁନିଛିଲ—
ଏକୋଟା କାମତ ମୂର ତଳ ହଇ ପରିଛିଲ ।
ବିଲାସ-ଭବନ କବି ଲୈଛିଲେ ଦେହାଟୋକ
ଏକୋତେ ନାଛିଲ ତୃପ୍ତି, ଗୁଚ୍ଛାଓ ନାଛିଲ ଭୋକ ;
ଆଗେ ଚାଉଳ କଟା ଧବି ହବି କଥା ପାଛ କବି
ବିପବୀତ ବୁଝିଛିଲେ ଶାନ୍ତବ ବଚନ ;
“ବ୍ୟାବିବ ମନ୍ଦିବ ମେହା”—ଗଲୋ ପତିଯନ !
ଏତିଥାହେ ବୁଝି ପାଲୋ ଜୀବନ ଶୁଭ୍ରଲାମସ,
ସାବ ଲାଗେ ପରେ ପଦେ କଠୋବ ଶୁଭ୍ରଲା ଜାଇ ;
ମେକଳଗୁ ହିବ /କବି ଖୋଜ ଘିଲେ ବାଟ ଧବି
ମାଟିତେଇ ଚିନ-ଚାବ ବୈ ସାବ ତାବ—
ଶୁଭ୍ରଲିତ ଜୀବନେଇ ସର୍ଗବ ଦୁରାବ ।

କାବାର ଛାଇଯା

ବଜୁ କଟିନ ଶିଲବ ପ୍ରାଚୀବ
ଲୌହ ଖଳଥା ତୋବ,
ନହୟ ସିମାନ କଟିନ ସିମାନ
ଲାଗେ ତୋବ ଛାଇବୋବ ।

ଇଟୋରେ ଧାର ହଇ ଉଠେ ତୋବ
ଭିତବ୍ତ ସକଳୋଟି ;
ଚକୁର ଆଗତେ ଗଲ ଯେନ ଦେଖି
ଆଗ ମରା ଆପ କିଟି ।

ତୋବ ଭିତବ୍ତ ଗଛ-ଗଛନିବ
ଇବ୍ରାତ ଜିବଣ ନାହି,
ତୋବ ସେଉୱୀଷା ବନନିବ ଢାଇ
ଦେଖି ଚକୁ ଶୁଭ୍ରାସ୍ତ ।

ହାତ-ଭବି ବକ୍ତା ଶିକଲିତ ତୋବ
ନାହି ତେଣେ କଟିନତା ;
ତାବ ଚିଅ-ଛାଯା ଚକୁତ ପରିଲେ
ଦେଖି ସେଣେ କଟୋବନତା ।

ଦଶ୍ମିତବ ଲୋବ ଥକ୍ଷିତ ନହୟ—
ତୋବ ଭିତବ୍ତ ଚବେ ;
କାଲି-କାପୋବବ ଛାତ ତୋବ ଦେଖି
ବୈଷ୍ଣବୋ ଚୋବବ ଦବେ ।

ବାନ୍ଧନି ସରତ୍-
ଆକାଶବ ହାୟା
ଆକ କଳା ଯେନ ଦେଖି;
ଭାତବ ହାୟାତ
ତୁଇଞ୍ଚବି ବୋବ
ଅନ୍ତ ନପବେ ଲେଖି ।

ଚୋଟୋବାଇ ଲଈ
ଫୁରୋତେ ପାତ୍ରବ
ଆମର୍ତ୍ତବ କଳା ହାୟା;
ପରି ଭାତ-ପାନୀ
ପୁରି-ଡେଇ ଘାୟ
ଜକା ହେ ପବେ କାହା ।

ପଥ୍ୟବିହୀନ
ତୋବ ଶ୍ରୀଷ୍ଟବ
ଦାଗତ ବୋଗବ ହାୟା
ବାଢେ ଘେନ ଲାଗେ,
ଖାଇ ଖାକିଲେଓ
ହୁଣ୍ଡଚେ ମନବ ମାହା ।

ପ୍ରହବେ ପ୍ରହବେ
ଚଲି ଆଛେ ତୋବ
ସକଳୋ ସରବ କାମ;
ତ୍ୟାପି ଷେ ତୋବ
ସରବ ହାୟାଇ
ନୋରାବେ ଦିବ ଆବାମ ।

ଲୌହ ଶଳଥାବ
ହାୟାବୋବ ପରି
ଦୂରସ୍ତୀବ ମନବୋବ
ଲୋରବ ଦବେଇ
ଟାନ ହେ ପବେ,
ଶମତାବ ପବେ ଓବ ।

ନାଥକେ ପ୍ରତ୍ୟେକ
ମାଧୁର ଚୋବ
ଭିତ୍ତର ଧନ୍ତ ତୋବ;
ମନର ହୁକିତ
ପରେହି ତୋରେହି
ହାତା, ଅକ୍ଷକାବ ସୋବ।

କାବା ! ତୋବ ଗୌହ ଶଙ୍ଖା ପ୍ରତ୍ୟେ
ଲୋହର ଶିକ୍ଷିତାଳ;
ନହର ମିମାନ
'ତୋବ ଗାବ ହାତା ଗାଲ।

କାବା ! ତୋବ ହାତା ଟୋହେ ଆଚଲତେ
ମାହୁର ବନ୍ଦୀଶାଳ;
ନିର୍ମମ ନିର୍ଝର
ଜୀବନର ଚିତ୍ରଶାଳ !

অফুরন্ত আনন্দ

মোৰ বাবে যেলি দিব নালাগে শিকলি,
বাঢ়ি খোঁড়া ভালকই কাৰাৰ ছুলাৰ ;
নালাপে মেহাৰ সুখ নিবিচাৰে। মই—
ইংগাকে কবিলো ঠাই আঘা-পৰীক্ষাৰ ।
ভেলটো সোধালো আজি তোমাৰ হাতত,
হৰ পাৰে অধিকাৰী শঙ্খে। শত্ৰু ;
সারধান ! নাই হলে তোৰ অধিকাৰ,
আতমাৰ ভিতৰ খোটালি সোমাৰু ।
নাই তাত মণি-মুক্ত। হীৰা-মৰকত,
ভোগ-বিলাসৰ বস্ত একোৱেই নাই ;
অপহৃণৰ ভৱ নাই একো তাত,
বৰ্গতো অধিক তথাপিতো সেই ঠাই ।
আছে মাখো আপোনাৰ দাপোণ এখনি,
তাতে পাৰে আছি প্ৰতিবিহ জগতৰ ;
তাৰ অনুৰূপ ছবি আঁকি আতমাই
যেলি দিয়ে সফুবাটি পৰমানন্দৰ ।
মুগনাতি হৰে গৰ নিষ্ঠতেই পাৰ,
সেয়ে হৰ আতমাৰ আনন্দ-বিহাৰ ;
আনন্দতে অগতৰ পৰিণতি মেথে,
নাথাকে যে স্ফুহা আৰু অস্ত সাধনাৰ ।

শক্তি-পীঠ

হিমনাই তেজৰ চেকুৰা
ফাটি ফাটি ওমান জয়াৰ
জ্বেডাত দুইক্ষণ উঠি
চাৰি ধুটা লবিঙ্গ চ'বাৰ।

ইয়াতেই বাধা-কঞ্জীয়ে
কোঁচি পাতি লৈছিল গুলি,
শিপিনীয়ে কোঁচি ভৰাই
লোৱা মৰে একোটা সূতলি।

গৰজি উঠিল লিঙ্গ দেখি
সিংহনীক ধৰাত শাখিলি,
পৰ্যন্ত দুফাল কৰি আহি
মাৰে একোবাৰ গোজাণি।

বণচণ্ডী লঙ্ঘিলি গাত,
ফিৰিঙ্গতি মৰে উফবিল
শক্রসেনা যেনিয়ে-তেনিয়ে—
নাৰী-শক্তি প্ৰকাশি উঠিল।

বৈ গল জগাৰ বজৰ
তপ্তধাৰা অয়-সাগৰত,
আজিও লগাই আছে তাৰ
খনকনি সন্ধাৱ পাৰত।

বীৰ জাতিতেও টোতেই—
“শৰাইত” মোমাইৰ মৃৎ লৈ
বণচণ্ডী আৰাধি দেশৰ
থ্যাতি থলে চিৰকাললৈ।

তথাপিতো শক্তিৰপা জয়া,
স্বদেশ আৰীৰ হত্তে প্রাণ
তুচ্ছ ব'বি দিলে ঘাতকক,
থই গল আদৰ্শ মহান।

শক্তি-পীঠ মহাতৈভৰতৰ
ঠাই বুলি নাজানানে তুমি ?
হৈছিল শত সাধনাত
সিঙ্গহান কামকপ ভুমি।

নাজানানে ইয়াতে এদিন,
অথ ক্লান্ত হৈ পরিচিল,
ভগবান শ্রীকৃষ্ণ—যিদিন।
অসম মোহিনী হবিল।

পুত্র হাতত ইয়াতেই—
পার্থেৰা পৰান্ত ঘটিছিল,
ভীমৰ গদাৰ বল লই
ঘটোঁকচ বৌৰ উপক্ষিল।

শুব অস্মৰ বৈয়া স্থান,
অপৰ্কপা অসম জননী,
চিকাল শক্তিকপা হই,
বিবাজিছে শক্তিশালিনী।

তেনেখন দেশতেই আজি
ডেকা-গাড়কৰ সমদল
যায়, কুহিলাৰ ঠাবি গণি
বন্দুকক, ভাঙ্গি হিলদল।

১৮ কাতি।

প্রাণ দিষ্টে অকাতধে আজি,
বকুৰ তেজেৰে বঞ্জি দিছে,
চৰণ ধূগল জননীৰ
চিকাললৈ আৰাধিছে।

দি দেশত আজি অত্যোচাৰ,
অবিচাৰ, খত নিৰ্যাতন—
বাবিনীৰ সন্দানেও আজি
শুণালৰ ক'ৰ পাত্ৰণ।

শত শত বন্দুক বায়ান
উফৰিল মাতৃৰ বৃক্ত,
নে মাতৃ-হিংস্ত চাঙ্গিন।
বেজি মাদে শালৰ গচ্ছত।

জননীৰ স্বাধীন পতাকা।
লে যায় যতেক সন্তান—
ছা-টিকো গচকি যোৱাৰ
নচৰ যে নৰকতো স্থান।

অহিংস যুদ্ধ

এই ভাবততে হৈছিল এদিন
কুকঙ্কণ ধর্ম-যুদ্ধৰ থল ;
সবৎশে নিধন হ'ল কুকুল,
ধর্মবেই অয় শেহত হল ।

অর্জুনে গাতৌৰ ধৰিব নোখোজে,
মাৰিব নোখোজে আপোনজন ;
ক্ৰৈষ্ণজ্ঞাব লই ক্ষত্ৰিয়ৰ ধৰ্ম
নোৱাবে কদাপি হব পালন ।

পাৰ্বৰ সাৰিধি অয়ঃ কৃষ্ণ—
দেখিলে পাণুবে নিদিলে বণ,
ভাৰতৰ শাঙ্কি নথব—নহলে
আসুৰিক কাত্ৰ শক্তি নিধন ।

যুদ্ধ ক্ষেত্ৰ নোহে সংশয়ৰ ঠাই ,
অ-ধৰ্ম মাথোন পালন কৰা—
ঘোষিলে কৃষ্ণই যুদ্ধ-ক্ষেত্ৰত,
আপোন পৰব ভাবনা এৰা ।

সংশয়ৰ ছেদ হল অর্জুনৰ,
বিঅৱ আকাঞ্চা মাথোন ব'ল ;

আপোন পৰৱ বিচাৰ গুচিৱ
মনৰ দৌৰ্বল্য আত্ম চ'ল।

বাহুবল হ'ল পৰীক্ষা ঘেড়িয়া,
অৰ্জুনে কৰিলে শৰ সকান;
ক্ষত্ৰিয়ৰ ধৰ্ম কিছু যে লবিল,
নহলে কৰ্ণক সংহাবা টান।

ভীমহই প্ৰতিজ্ঞা নেবিলে ষদি ও
ইচ্ছা মৃত্যু হই ধৰ্মৰ অয়
ক্ৰোতালে, শৰ-শয্যাত পৰি,
সাধিলে সিদৰে অধৰ্মৰ ক্ষয়।

“অশথামা হত ইতি গজ” বুলি,
ধৰ্ম যুধিষ্ঠিৰে অধ্যাতি ভয়
পাহবিল, সহিকণত বণৰ—
নহলে অযৱ আশা যে নবয়।

বৃক্ষ-নীতি বণ-ক্ষোশল খিটো—
যুক্ত নকৰাৰ উপাৰ হৱ;
সমুখ সমৰ আহি দেখো দিলে,
একেটা খোপনি তেড়িয়া নবয়।

কুণ্ঠি-কাৰাজত ঘোৱা সেনানীৰ
যুক্ত-ক্ষেত্ৰ পালে নিমিলে ভৰি;

ତେତିଆ କେବଳ ଭାବେ ଶକ୍ତମନ
କିମ୍ବରେ ସଂହାବ କରିବ ପାବି ।

ଅହିଂସ ଯୁଦ୍ଧତ ସାଧୀନତା । ଗାନ୍ଧୀ—
ଭାବତର ଆଜି ଅମୋଘ ଧାରୀ ;
ଯୁଦ୍ଧ-କ୍ଷେତ୍ରର ବ୍ୟାତିକରମ ତାର
ଅଲପ ହଁଲେ ଏ, ମୁଁ କଥା ନାହାନି ।

ତଥାପିତୋ କୁକକ୍ଷେତ୍ର ବଣର
ମୂଳ ନୌତି ଧର୍ମ-ଯୁଦ୍ଧ କରୀ ;
ଶୃଷ୍ଟି ହଁଲ ତାତେ ମହାଭାବତର,
ନୋରାବି ଆଁତରି ଯାଏ ତାର ପରା ।

ଆଜିର ପାର୍ଶ୍ଵ ସାବଧି ନାମିଛେ
ଅହିଂସ ଯୁଦ୍ଧର ବାହିନୀ ଲାଇ ;
ବଣତ ସଦିଶ ନୋରାବି ସିମାନ
କର-ଅର୍ଥଥାମା ବାହିବଲୈ ।

୧୯ କାତି ।

ମୁକ୍ତିର ପଥ

ମୁକ୍ତିର ପଥ ନହିଁ ଶୁଗମ—
ଦୁର୍ଗମ, ଅତି କଣ୍ଟକମୟ,
ପଥକ ଆନ୍ତ କ୍ଲାନ୍ତ ହୋଇଜନ
ମୁକ୍ତି ପଥର ସାତୀ ନହିଁ ।

ମୁକ୍ତି ପଥିକର ତୃଷିତ ପ୍ରାଣର
ତ୍ୱା କନ୍ଦାପିଲ ନହିଁ ଦୂର;
ମୁକ୍ତି-ତୌର୍ଧତ, ଆନଏ ଅନ୍ତତ,
ଶାନ୍ତ ନହଲେ ଶୈର ବୋବ ।

ମୁକ୍ତି ସାତୀର ମନତ ନପରେ
ପଥର ସହଳ ଲଖେ କିମାନ;
ମୁକ୍ତି କାମନା ଯେ ଧାଉତି ପ୍ରାଣତ;
ତାବ ବିନେ ଆକ ନାଜାନେ ଆନ ।

ନହସାତୀ ହିଁ କିମାନ ପଥର
ମୁକ୍ତିକାମୀ ଜନେ ନାଭାବେ ତାକ;
ଲକ୍ଷ୍ୟ ନକରେ ଗନ୍ଧର୍ଯ୍ୟ ପଥତ,
ସାଞ୍ଚିତେ ଲଗତ ପାଲେନୋ କାକ ।

ଶୁଭ୍ର ଆନନ୍ଦ ପୁଜାବୀ ବିଚାବି
ଶୁଭ୍ରକାମୀ ଅନ ନାଥାକେ ବହି
ଶୁଭ୍ରନାଥର ସାଟତ ନିଜେଇ
ରିଷ୍ଟାବେ ଝୋବୋରା ମାରେ ଗଛି ।

ଶୁଭ୍ର-ଶନ୍ତିବତ ସିଂହ ଦୂରାବ
ନିର୍ବିଚାବେ ଶୁଭ୍ରକାମୀ ଅନ ;
ଦୂରାବ ଡଲିବ ଏହାତିତ ବହି
ବିଚାବେ ମାଥୋନ ଦେଇ-ଦର୍ଶନ ।

ପାଲେ ବା ନାପାଲେ ନିର୍ଧାଳି ପ୍ରସାଦ,
ଶାଟାଙ୍କ ଅଣାମେ ଧୂମବିତ
ଦେହାତେଇ ଉଠେ ଗଜ ଚନ୍ଦନବ,
ଆଗ କବି ତୋଲେ ଆମୋଦିତ ।

ଶୁଭ୍ରକାମୀ ହୈ ସାତୀଯେ ଏଥୋଡୋ
ସାବ ନୋରୀବିଲେ ସାତୀ-ପଥତ ,
ସଂକଳ ସାତୀବ ଲୋରା ମାତ୍ରକେଇ
ଶୁଭ୍ରନାଥେ ଦେଖା ଦିଯେହି ପ୍ରାଣତ ।

୨୦ କାତି ।

ଶ୍ରୀମା

ଖଡ଼ଗ ହଣ୍ଡେବେ ନବମୁଣ୍ଡ ଲାଇ,
ନୂମୁଣ୍ଡମାଳିନୀ ହାଇ ଶ୍ରୀମା,
ଅକ୍ଷ ତମ୍ଭାତ ପବି ନିଷକେଇ ;
ଦେଖିଲା ସେ ଯହାକାଳୀ ବାମୀ ।

କାଳୀ କପ ଧବି ଅକ୍ଷକାବତ,
ନେଦେଖିଲା ଶ୍ରୀ ଦେହା ଶିରବ ;
ପ୍ରମାଦ ଘଟିଲ ମନତ ତୋମାବ,
ମହାଭ୍ରମ ବୁଲି ବୁଜିଲା ନିଜବ ।

ହାତବ ବକ୍ତବ୍ୟ ହାତତେ କବାଳ
ମାବିଲ, ଖଡ଼ଗ ହାତତେ ବଳ ;
ନୋରାବିଲା ଆକ ଏଥୋଅକେ ଦିବ;
ତମୋଘର ଦେହା ଉଲଙ୍ଘ ହଳ ।

ଶିରବ ବୁଝୁତ ନୋଶୋଭେ ତୋମାବ
କବାଳ ବନ୍ଦନ, ଉଲଙ୍ଘ କପ ;
ଶିଶ୍ର-ଶକ୍ତି, ତୁମି ତମୋଗୁଣ ଧବି
ହବିବ ନୋରାବା ଇଟୋ ଅକପ ।

ଶ୍ରୀମା ! ଆଜି ତୁମି ବକ୍ଷାକାଳୀ ହୈ,
ବାଥା ଉଗତକ ଶାମଲା କବି ;
ତେଜେ ତୁଙ୍କଲି ଦିଲେ ଧରାଥନ,
ନାଲାଗେ ଥାକିବ ଖଡ଼ଗ ଧବି ।

দৌপালি

নাই আজি মোৰ বস্তি শলিতা,
জলাও. কিহেবে দৌপ-আধাৰ ;
প্রাণত জলাই দিয়া জুটকুৰা,
দৌপ্ত তৈ উঠক কাৰাগাৰ ।

ঘনীভূত হৈ আছে কাৰাগাৰ
কৌচিকলীয়া তমসা লই,
জিলিক উঠক, তাৰে পোহৰত
লোৱাৰ শিকলি শলিতা হট ।

গলক পাষাণ-হৃদয় কাৰাব.
প্রাণৰ অগনি উত্তাপ পাই ;
ক্ষণিক স্থথৰ চগাবোৰ পৰি
পুৰি-ডেই ভাতে হওক ছাই ।

পুঞ্জীভূত হৈ থকা দুখ-ঙ্গেশ,
ভঞ্জীভূত হওক ভাতেই পৰি .
লোৱাৰ শলথা তৌৰা হৈ উঠক—
মামকে ধৰিব নোৱাৰা কৰি ।

কুঙ্গিয়ে কুঙ্গিয়ে পোহৰ পঞ্জক
ইটিয়ে সিটিব মুখলৈ চাই,
দাপোণৰ জৰে চাওক ইটিয়ে
সিটিব মুখত কিনো দেখা পাই ।

তাবে পোহৰত নামক দ্বেরতা,
কাৰাৰ বছন নকৰি ভৱ ;
পূৰ্ব-পুৰুষ নামি আহি চাওক
জন্মভূমিৰ কি জণা হৰ ।

চাওক দুবাই চিনিব পাৰেনে
এয়ে সি সৱৰ ওপজা ঠাই ;
কুক্ষিত সোমাই চাওক একোবাৰ,
দেৱতায়ো পোহৰ পায় নাপাই ।

জুইকুৰা দিঘা অলগ খুচৰি,
কাৰাৰ প্ৰাচৌৰ লজ্জি যাওক ,
তাবে শিথা বাঙ্কি অঞ্চি-মজ্জৰে ;
সাধকৰ মল দৌক্ষিত হওক ।

গাঁটিয়ে গাঁটিয়ে শিকলি ঘোৰৰ ,
দীপমালা আজি জলি উঠক ;
শাৰীয়ে শাৰীয়ে আবিৰাব জুয়ে,
জনমৰ ঠাই পোহৰ কৰক ।

বাহিৰে জলিছে বস্তি শাৰী শাৰী,
কাৰা ভিতৰত শিকলি মালা—
তাবেই পোহৰ পৰে আকাশত ;
ঘৰে ঘৰে আজি দীপালি জগা ।

বাহিৰে ভিতৰে ধি কুৰা অগনি
জলিছে, তাবেই শিখৌঘোৰ
শিবাই শিবাই সোমাল দেহাৰ ;
পোহৰ পেলাই প্ৰাণত মোৰ ।

କାକୁତି

ମନ ! ତାଇ ଜୀବନତ କତ ଲଟି-ଘଟି
କବାଲି ସକଳେ । ପାହବିଛେ ;
କାବାତେଇ ଶୃଦ୍ଧିତ କବିମ ଜୀବନ,
ମରଣ ଆଗତେ ଭାବିଛେ ।

ଭାବିଛେ । ଇଯାତେ ତାଗ କବିମ ସକଳେ,—
ଅହତାପ କବିବ ଲଗୀଥା ;
ଜୀବନର ଭୁଲ-ଆତି କବିଲେ । ଯିମାନ—
ଶେଷ ହବ ଜୀବନ ସକ୍ଷିତା ।

ମାଧ୍ୟନାର ଠାଇ ବୁଲି କବିଲେ । ବବନ
କାବାଗାର ମୋମାଳେ । ଯିଦିନୀ ;
ଇଯାତେ ଆହୁତି ଦିମ ସଂକଳ କବିଲେ,
ଜୀବନର ସତେକ ବାସନୀ ।

ଲକ୍ଷ୍ୟ ଭଣ୍ଡ ଜୀବନର ଶେଷ ସମାଧିବ
ଠାଇ ହବ କାବା ଆହୁତ ;
ମିଛପୀଠ କବି ଲମ ବୋଗାସନ ପାତି—
ଭାବିଛିଲେ । ଇଯାକେ ମନତ ।

ଏନେଟୋ । ସଂକଳ କବି କି ଯେ ଜ୍ଵଥ ପାଲେ,
ମେହି କଥା ଅକୋଣ କବିବ
ନୋହାବୋ । ଇ ମୁଖେ ଯହି କୋନେ ପତିରାବ—
ତହି ତାକ ନୋହାବ ଭାବିବ ।

ଭୋଗ-ବାସନାର ବାହ, ମେହାକୋ ପାରିଲୋ
ବବାଇ ବୁଜାଇ ଥିବ ଯଇ;
ଡୋର ପରା ନୋଟାରିଲୋ ସଂକଳ ବାଧିଦ—
ପାହବାଇ ଦିଇ ତାକ ତାଇ ।

ଏତିଯାଉ ଶ୍ରେଷ୍ଠଟୋକ ଉଚ୍ଚଟାଇ ଥାକ,
କବି ମୋର ବିପକ୍ଷାଚରଣ;
ମୋହବାଇ ଦିଇ ତାକ କଥାଇ କଥାଇ
ହଲ ବୁଲି ହୃଦବ ଭୀରନ ।

ଲଗାଇ ଯୁଜାଇ ଥାକ ଆନବ ଲଗତ
ଟୁଟ୍ଟକୀରୀ କଥାବୋର କଇ;
ଡୋର କୁତ୍ର ଆଶ୍ରମର କଥାବୋର ତନି
ପାହବୋ ଆଶଳ କଥା ଯଇ ।

କୁତ୍ରାଶପି କୁତ୍ର ଯଇ ବୁଜିଓ ଝୁବୁଲୋ;
ତାଇ ଦିଇ କିବାଟୋ ବୁଜାଇ;
ଗୋଟେଇ ସଂସାର ଦେନ ମୋର କାବଧେଇ
ଆଛେ—ଆକ ଆନ କାମ ନାହି ।

ଏନେଟୋ ବୁଜାର ତାଇ ମୋର ହୃଦ-ହୃଦ
ଆନେ କିମ ଝୁବୁଜି ଧାକିର ?
ଆନବ ନୋ ହୃଦ-ହୃଦ କିନୋ ବୁଲୋ ଯଇ,
ମେହ କଥା ନିଜିଯ ଭାବିବ ।

আপোন হলোই ভাল জগত্তো যে ভাল—
এই কথা বিখ্যান নকৰ ;
ভিজমান মোবকণ লোকৰ পালেই,
তাকে তই বেল যেন কৰ ।

যিছাতেই তই মোক ঘিটো বুলি ভাব,
আছে জানো তেনে ভাবিবৰ
কাৰণ—বি বোৰ লোকে শত দোষ মোৰ
দেখি আছে অতি নিষিদ্ধ ?

পাইছো এখনি ঠাই আজ্ঞ-পৰীক্ষাৰ
তাত্ত্ব তই নিষিদ্ধি আমনি ;
গোটেই জীৱন তই ফুৰালি উৰাট,
নিনিবি আকো ষেনি-তেনি ।

আজ্ঞ-সমাধিত বহি নিষতে নিজক,
মৃত্যুৰ আগতে লঙ্ঘ চাই ;
এমে মোৰ শেষ ভিক্ষা, নেভাডিবি তই
ধ্যান সেই—আসন লবাই ।

मातृ-पूजा

हात-डवि वङ्गा मोर बन्धीशालत,
स्त्रीत्व चरण मेरो किनो। उपायेवे;
हातेवे नोळावा हलो। गङ्ग-पुण्य दिव,
साष्टाङ्क प्रणाम मिठा हल वङ्गमेवे।

धूप-दीप-गङ्ग आहे वाहिरव परवा
मातृ-पूजा चलि आचे बुजिव पाविछो;
आकाश बङ्गिमा है उठा येन देखो,
चरणत वङ्गजरा परिचे बुजिछो।

वाहिरत शङ्ख-खटा-डवा रांजे तुनो।
प्रतिधरनि उठे ताव कावाव बुकड;
सेवे चूबि माव घास आपोना आपुनि,
मोर शृंग चिनाकाश हळय माजड।

सेवकव डावतेहे वलो तुक हहे,
ध्यानत चरण तुटि ललो। भ्रमयत;
देखो बङ्ग उठे मोर बुकुव डेजेवे।
वङ्ग उडा सेडा आजि ताव शुचवत।

जननी गौमीनी आजि पाहिछो। आगड;
बन्धीशालत निछो। अपि हे देहाटो;
अति आघातते हव मुक्तिव दुराव
मुक्ति, मुक्तिव शय वाजिव आगडो।

ସ୍ଵପ୍ନ ନେ ଦିଠକ

ସ୍ଵପ୍ନ ନେ ଦିଠକ, କିହବ ମାଜତ
ପରିଲୋ ହି ଏକୋ ବୁଝା ନାହିଁ,
ହାତ ଦିଲେ ପାଞ୍ଚ ଲୋରବ ଦୂରାବ,
ଅନାଯାସେ ମନ ଶଳାଇ ଥାର ।

ଦିଠକତ ଦେଖୋ କିହବ ଛାଇଟି
କାବାବ ପବେହି କବ ନୋରାବୋ;
ନିଜ ଛାଇଟିକେ କାବୋବାବ ବୁଲି
ପାଛେ ପାଛେ ଲବି ଡାଗବି ପବୋ ।

ହିଠକତ ଦେଖୋ କାବାବ ମାଜତ
ବକ୍ତା ଯେନ ତବି ଶିକଲିବେ;
ସମୋନତ ଦେଖୋ ବିଦ୍ୟୁତ ସକାବେ
ଧାଉଣେ ଧୋଜତ ଫେଟିଓ ମବେ ।

କାବାବ ମାଜତ ଦେଖୋ ଦିଠକତ,
ଛାଇବାଜି ଦେନ ସକଲୋ କଥା;
ସ୍ଵପ୍ନତ ପୋରା ପାବିଜାତ ଶାଳା—
ଶିକଲିବୋବଡ ଦେଖିଛୋ ଗନ୍ଧା ।

दिठकत · देखो काबा॰ आठीव
जाजियब काबो साध्य नाहि;
आँव कापोब लबे सपोनत
थई दिठु ताक मेरियाहि ।

मरिशालि घेन देखि दिठकत
काबागाब, अति भयक्क;
सपोनत ताते पूजा लव आहि,
इष्ट देरताहि साधकव ।

सपोन दिठक असहा काबाहि
लिघे एकाकाब कवि मनत,
स्वप्न-दिठकव अडीत लोकव
चेतना दियेहि सृष्टु श्रागत ।

२४ काति ।

তপস্তা

কঠোর তপস্তা কবিব লাগিব,
জননীৰ মুক্তি লাগিব সাধিব,
সাতকুৰা অগ্নি বাহিবে জলাই
কৰা ই তপস্তা কদাপি নহয় ।

অন্তবিপ্লবে পুরি-ডেই মৰা,
ছিনা-ভয়-শক্তা চাটি হৈ পৰা,
প্রাণৰ ইচ্ছন সমিধ জলাই,
কবিব লাগিব নিজকে ক্ষয় ।

সাতকুৰা অগ্নি বাহিবে জলাই
কৰা ই তপস্তা কদাপি নহয় ॥

আজ্ঞাবলি দান কবিব লাগিব,
নিজৰ তেজেবে মণ্ডহকে। ধূৰ
লাপিব, নিজৰ হাতেবে ই দৰে
তপস্তা কৰা সহজ নহয় ।

চপৰা চপৰে খহাই নিজৰ
মাংস ডাকিনী ঘোগিনী মুখৰ
আহাৰ কবিব লাগিব, অক্লেশে,
যজ্ঞনা যাতনা নকৰি ভৱ ।

সাতকুৰা অগ্নি বাহিবে জলাই
কৰা ই তপস্তা কদাপি নহয় ॥

কাবাব শঙ্খা শালত জগাই,
বঙ্গীশালত মূরটো সুমাই,
কবিব লাগিব নিজকে দান—
নি নিজকেই নিজে অভয় ;
ডিডিত পরিব ধড়গ হষ্ট,
হব নালাগিব অলপো জ্ঞে,
থেথিও মৰণ চরুব আগত
বৈ আচে হৈ তেজোময় ।

সাতকুবা অঘি বাহিবে জগাই
কৰা ই তপস্তা কৰাপি নহয় ॥

কন্দ কঠ আজি বাকশক্তি ছাড়ি
গগণ বিমান কণ্বাব নোরাবি,
বীজমন্ত্ৰ জপি আজ্ঞাশক্তি লভি,
কবিব লাগিব অনুব অয় ।
নিজব অগ্রিবে অঙ্গ-শন্ত্ৰ কবি,
শন্ত্ৰব নিপাত যিষ্বৰেই পাবি
কবিব লাগিব—নহলে নহয় ।

সাতকুবা অঘি বাহিবে জগাই
কৰা ই তপস্তা কৰাপি নহয় ॥

উই হাকলুব দৰে কাবাগাব
উঠিছে, চাৰিউকালে ই দেহাৰ ;
মাটিব শবীব মাটি হৈ গলেও,
নহব আতমাৰ কৰ ।
তেতিয়া স্বপ্নকাৰ আজ্ঞাজ্ঞোতিত,
আতবে যিবে পূৰ্ণিমা বাতিত
আছাব, সিদবে লৌহ কাবাগাব
আতবিব হৈ ছারাময় ।

সাতকুবা অঘি বাহিবে জগাই
কৰা ই তপস্তা কৰাপি নহয় ।

স্বাগতম

(গড়মুরীয় ডেকা গোপীমীর কাবা বরণত)

গড়মূৰ সত্ত্ব আজি গড়ৰ ভিতৰ,—
 ঠাই হল কুকঙ্গেৱ ধৰ্ম-ক্ষেত্ৰ ;
 সাধীনতা আগধিৰ
 সাধনাৰে শাভ কৰি
 নললে নবম ধৰ্ম-কৰ্ম জগতৰ ,

পৰাধীন দেশত নো সত্ত্ব কিংব !

অভিমুহ্য সোমোৱাদি বেচৰ মাজত .
 সোমালেহি ধৰ্মগুৰু কাৰা ভিতৰত .
 নেদেখো হে সপ্তৰথী,
 এই কুকঙ্গেৱ এবি কনিবা পলাল,
 অধৰ্ম যুক্ত আৰু উলো কৃতকাল !

সঞ্চয়ে কিমান আৰু দেখুৱাই দিব,
 অক ধৃতবাট্টে জানো মেই চকু পাৰ ?
 অভিমানী দুর্যোধন
 কুকৰ সেনানীগণ
 পাঞ্জাঙ্গন নিনাইত কিপিছে সঘনে,
 যতো ধৰ্ম ততো জয় ই কথা নামানে !

ত্ৰিবজ পতাকা যদি শুবে ভাৰতত,
 ধৰ্ম-বৰজা উক্তাৰ কি কাৰ সত্ত ?
 সামা-মেঝী সাধীনতা
 থাপনাতে নৈষিকতা।

ବୁଦ୍ଧ, ଶୁକରମେତେ ଭାବେ ସତ୍ତ୍ଵ ଥାନବ—
ଧୂଲିତେହି ଗଜା ଆନ ପାଧିନ ଦେଶବ ।

অনন্তী বলিনী যদি আজি ভাবতব,
মুক্তি ক'ত দেৱতাবো আজি বৈকুণ্ঠে ?
অচল কি সবে বব,
হিমাচলো লবি শাব
সাগবো। শুকাই হব শুক মকড়মি,—
শনো ষেন শুকদেৱে দিষ্টে এই বাণী।

স্বাপতম শুকদেৱ ! পৃত কাৰাপাৰ ;
সোমালেহি মুক্ত কৰিউকাৰ দুৱাৰ।

বন্দৌশাল উবি গল,
কেনি দৈৱবাণী হল,—
ভাবতব মুক্তি বিনে ধৰ্ম-কৰ্ম নাই,
মুক্ত হব মহাক্ষাৰ সাধনাৰ ঠাই।

କାବୀର ସନ୍ତୋଷ

ନିଦାକଣ କଟେ ସହିଛା ସେ ତୁମି
ବୁଝିଛୋ ହେ କାବୀ ! ମନେ ଧରେ
ତୋମାର ବୁକୁତ ସାତକୁବା ଜୁହୀ
ଜଳି ଦହି ଆହେ ନିବସୁବେ ।

ନିଷ୍ଠିର ନିଶ୍ଚମ ହାତେଇ ଗଡ଼ିଛେ
ତୋମାର ହାତର ଶିକଳି ଡାଳ ;
ସମର ସନ୍ତୋଷ ଭୁଗିଛା ନିତଉ ;
ନାସାଯ ରୂପୁରାଯ ତୋମାର କାଳ ।

ତେଜତ ଡାଙ୍ଗିଛେ ଜୀବା ମାହୁହକେ,
ତୋମାର ବୁକୁତ ଥୋଳା ପାତି ;
ଶିଲେବେ ବଙ୍କୋରା ହିହାଓ ତୋମାର,
ଏକୋବାବ ସାବ ଥୋଜେ ଫାଟି ।

ତୋମାର ଆଗତେ କତ ଅଭ୍ୟାଚାର
ହିଁ ଆହେ ତାବ ଲେଖ ସେ ନାହିଁ ;
ପେଳାଲେ ତୋମାର ଚକୁ କାଢି ସେନ
ଲୋରବ ତପତ ଶମ୍ଭାଇ ।

ସୁବି ସୁବି ଆହେ ହା-ହମୁନୀଯା,
ମୋମାଇ ତୋମାର ବୁକୁତେହି ;
ମଚିବ ମୋରାବା ତପତ ଚକୁଲୋ,

ଏବୋଟା କଥାଇ ଶେଳମାରି ଦିଲେ,
ବିଜେହି ତୋମାର ଅସ୍ତବତ ;
କଚାଲି କଚାଲି ଆକ କୁମୁରାଇ
ଦିଲା ଲୋକ ଓଳାଯ ଗୁଚବତ ।

ତୋମାର ଛୁଥତ ଛୁଥ ପୋରା ଲୋକ
ଦେଖା ନାହି ମୋର ଚକ୍ରଯୋବେ
ନିଜେ କୁଟି ମରା ହଲଡାଳେ ତୁମି
ନିଜେ ଟାଚି ଦିବ ଲଗାତ ପବେ ।

ଜୀଯାତୁ ଧିନିକେ ସହିବ ଝୋଥାବେ
ମୋପୋରା ଏବାବେ ମିଠା ମାତ ;
ଚେଷ୍ଟା ହେବାଇ ଚିଞ୍ଚିବି ନିଲେଓ,
ଡେତିଯାଇ ଧବେ ଖେତରେ ଗାତ ।

ବେଜାର ତୋମାର— ନିଜ ହାତେ ଗଢି
ଲବ ଲଗା ହଲ ପୋତାଶାଳ ;
ଜୀଯା ମାନୁହେବେ ଶଖାନ ପାତିଛା
ଆହିବ ମୋଖେଜେ ମହାକାଳ !

ଏତିଯାହେ କାବ୍ୟ ! ବୁଝିଛୋ ସେ ତୁମି
ଅଳପ ସାନ୍ତନୀ ତୋଗା ନାହି ;
ତୁମନାତ ଶୋବ କୁରଣା ଧିନି
ଏବୋ଱େ ନହୟ—ଦେଖା ଯାଏ ।

କାବୀ ମୋର ଜୀବନର ଧାରା

କାବୀ' ମୋର ଜୀବନର ଧାରା
ହଲ ଆଜି ଇଯାତେଇ,
ହଇ ଆଛେ ଆହିଦିବ ପବୀ ।

ଜୀବନର ତ୍ରିବେଳୀସଂକ୍ଷିପ୍ତ
ଦେଖୋ ଇଯାତେଇ ହଲ
' ଲାଭ କବି ଓଚିବ ସଂସଥ ।

ଜୀବନ ମୌତ ମୋର ସାର
କାବୀର ଡଲେଦି ବୈ,
ଜାନୋ କୋନୋ କାଳେ ଶୁଣୁକାଯ ।

ଓପରତ କୃପାକାବ ବାଲି
ଏବ ଧୈ, ତଳେ ଧୈ,
ପାଇ କୋନ ସାଗରର ତଳି ।

ବାଲିଯେ ଶୁଦ୍ଧିବ ଜୀବନର
ମଲିନନ ଭାବଦୋବ,
ପାନୀଯେ ହରିବ ତରକା ମୋର ।

ଇଯାତେଇ ପବି ବନ୍ଦ ଗଲ
ଲୁହିତର ଛିଗୁଧାବ
ଆହିଲେଇ ବୈ ଧାବ ଧଲ ।

ଦେଶ ନିବ ଆକୋ ଚୌରାଟ,
ଡାଙ୍ଗିର ଗଢ଼ିବ ପାବ, ନିର୍ଜେଇ ମୌତର ଧାବ
ଲବ ସେଣି ଗତିରେ ପୋନାସ ।

ପାଈକେ ନିବ ଉଟୁରାଟ,
ଆକୋ ପଚୋରା ଆହି ସମାଗରି ନାହି ଡାହି
ଧନ ମୋଣ ଆନିବ ବେହାଇ ।

ଧନେ ଧାନେ ଦେଶ ଉପଚିବ;
ମାତ୍ରବ ମଞ୍ଚାନ ଗଣ, ଦ୍ୱାଧୀନ ଜୀବନ ମନ
ଲଇ ହିନ ହୃଥେବେ କଟାବ ।

ଶିପାବତ ମେଉଜି ଚାଗବି
ପରିବ, ଡାତେଇ ଗଟ ଧୂଳି-ଧୂମବିତ ହଇ
ମିଳି ଯାଏ ମାତ୍ର-ଭୂମି ଶ୍ଵରି !

ত্রতৌ মহাঞ্চা

(মহাঞ্চা গান্ধীর অনশন উপলক্ষে লিখা)

অর্ক শতাব্দীৰ
নোৱাৰে বিফল হৰ ;
যুগ-স্থৰ্মুচিৰ
বজ্র-অহি হৈ বৰ ।

তপোৰলে আজি
আঞ্চল দেখুৱাই,
জপত শুভ্রত
তাৰ ষে তুলনা নাই ।

সত্য, অহিংসা,
অগতৰ মুক্তি-পথ
দেখুৱাই গৈ
নাজানা কিনো বিপথ ।

ভাৰতবৰ্ধৰ
তোমাৰ সাধনা ঠাই ;
মুক্তি মন্দিৰৰ
সিঙ্কিৰ পলম নাই ।

সতা সাধনাত
ত্রতৌ তমি আজি.

সমাধিত বহি
অন্তর জ্যোতি
বাহিকত প্রকাশিত।

আত্মাৰ সূক্ষ্ম
বিচাৰত তুমি
যি সত্যৰ সন্ধান
পাইছা তাতেই
সত্য যুগৰ
আহিছে নে আহ্বান?

ହେବେ ମନ୍ତ୍ୟବ ଅପଳାପ ଆନି
ଧରିଛା ସେ ଏହି ବ୍ରତ;
ଶୋଗେ ମଟା ଜନେ କିମ୍ବବେ ବୃଜିବ
ଇଯାବ ଶାହାଜ୍ୟ କ'ତ ?

ଅଶ୍ଵବ-ବୃକ୍ଷତ ଶିର-ଶକ୍ତି ନାଇ—
ପାଳା ଏହି ମତା ତମି :

বক্তব্যীকৰ

বক্তপাত হলে

বাটে অস্ত্রব ভূমি । •

অস্ত্র ই সত্য

পৰা নাই লৰ

অগতে হিমাত থাপি ;

তোমাৰ হিমাত

জনোতে আহিব

পৰা নাই কাৰ চাপি ।

হি কুৰা অগ্নিত

শোধন কৰিছা

সত্য বস্ত অস্ত্রব,

হে যহামানৱ !

তাডেই প্ৰকাশ

হব সত্য অগতব ।

তোমাৰ হাতব

মৃষ্টিত আতমা—

বিনাশন নাই তাৰ :

ত্ৰভৰ অস্তত

দৃঢ়ণে প্ৰকাশ

হব সেই আতমাৰ ।

সত্য অহিংসা

প্ৰেমৰ ত্ৰিবেণী

সদ্বৰ কুষ্টলৈ ;

মিলনৰ বাটে

অগত চলিব

মাননৰ যহামেলালৈ ।

বেদী হল আজি মাতৃ-পূজাৰ

(বৰতেটা জ্ঞেন্ট 'লাঠী চাঞ্জৰ' কাহিনী)

(১)

সিদিনা বেলিটো পৰা আ৬্ৰেই
কৰুৰী বিলাকে থাই উঠিল,
ঘৰে ঘৰে গৈ সোমাল ষেতিয়া
দাফাদাৰ আহি তলা মাৰিল।
বাজবন্দী সৱে ঘূৰি-পকি পাছে
বাঙ্কনী ঘৰত সোমাল আহি,
বহিল খাৰব আশাত মাটিত ;
ললে ঠিক কৰি বাটি-কাহী।
জুই ! জুই ! জুই ! পাগলা ঘণ্টা !
নিয়িৰতে জেল পৰিল ভৰি,
বিজাৰ্ড পুলিচ--হাতে হাতে লাঠি,
পালি-প্ৰহৰীৱা আহিল জৰি।
হৃষাৰী খৰব অক্ষ যিলনৰ
সঙ্কিৰ ঠাইত লাগিল হেনো।
জুই—দেখা পালে তাকো দুৰতেই ;
দুটা প্ৰহৰীয়ে—নাহিল কোনো।
পলাল ! পলাল ! ধৰ, ধৰ, মাৰ !
লাঠিৰ শবদ মূৰত উঠিল。
'আই ঔ' ! 'মৰিলো'—বিকট চিঞ্চৰ—
মাটিত তেজৰ চেকুৰা ঝাঞ্জিল।

ହର୍ଷାନ୍ତରୀ ଶାଗି କେନି କୋନ ଗଲ
 କବିନୋ ସୁରତ ଆଠୀର ମାର
 ପରିଲ କୋନେଓ କବ ନୋରାବିଲେ—
 ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଶେ ଘୋବ ଅଛକାବ ।
 ଡତାଲିକେ ଦିଲେ ଡଳୀ ବଞ୍ଚ କବି
 ବନ୍ଦୀସକଳ ଥକା ସରତ,
 ପଛ ଥେବା ଦିଲେ ସେନିଯେ ତେନିରେ
 ସିରେଇ ଆହିଲ ବାହିବତ ।
 ମାରବ କୋରତ ଡେଡାଉବି କାଢି
 ପାଖିତଗୀ ଇହ ଅହା ଦରେ :
 ଚୁଚବି ଆହିଲ କେନି କୋନ ଗଲ,
 ନିଜେପର ଏକୋକେ କବ ନୋରାବେ ।
 ମୁଖର ଭାତର ଗବାହ ସରିଲ
 ବାକନି ସରତ ଟାଙ୍ଗୋନ ଖାଇ ;
 ଡେଜେ ତୁଳକଲି ଦିଲେ ବାଟି-କାହି,
 ମଜିରାବ ବୁନ୍ଦ ଭକ୍ତଭକାଇ ।
 କିହଳ, କିହଳ ! କାକ କୋନେ କୟ,
 ମୂରବ ଓପରେ ଟାଙ୍ଗୋନ ଘୁବେ ;
 କାବୋ ଥେତାଲିଛେ ମୁବ, କାବୋ ହାତ
 ଭାଗିଲ, କକ୍କାଲବ ଯୋବା ଲବେ ।
 ଦୁଃଖାପାପ କବି ଲବେ ଚାବି ଦିଶେ
 ଚିପାହୀ-ଚଞ୍ଚବୀ ବିଚାବି କାକ,
 ଥାପତେଇ କାକ ମାବେ ଧବେ ଟାନେ—

हेचि-ठेलि आवि भितव स्माई
 खले प्रकलोटि छुडाव मावि ;
 वेदव शलखा चेपेटा लागिल
 किनो अत्याचार ! हवि, हवि !
 लोरव शलखा हेडाव माज्जुत
 पाव हवलै साध्य नाई ;
 चक्रव आगते कि ककण दृश्य !
 डेकाव मुवव तेज बै याऱ .
 दैत्य दानरव विकट मृत्ति
 निठकते आहि देखा दिले,
 माहा-मगताव लेश माज्ज नाई,
 तेज्जेवेह हात बोलाई लले ।
 निर्यातित सर अचेतन हल,
 होलोका होलोके तेज गलत
 चिकिंसक आहि फटोकानि वाञ्चि
 पापव प्रलेप लिलेहि मुवत .
 यमदृत गल आंतवि घेतिया
 यमबाज आहि सोमाल तात,
 धर्मबाज हई देखुताई गल—
 विचाव करिव दोष काव गात ।

(२)

सांकवे आहि मनत परिज
 आगते गोटोरा लाठीव द'म
 जेलव दुराव चुकत देखा ये—
 अपेक्षि आचिल आजिव क्षण ।

ମନତ ପରିଲ ଏଥନ କଷଳ
 ଆବତ ହୁଅନେ ଟାନି ସେ ଲୋକୀ,
 ଥାଳ ନୋହୋଇବ ବୈ ଥାକୋଡ଼େଇ
 ଚେତୀ ଡାଙ୍କ ଗାଳ ସନ୍ଦାସ ଧୋଇ ।
 ଆକ କମ୍ପିବ ପୋଢାକେଓ ନଟା
 ଗାତେ ଗୋକ୍ଷୋରୀ ଚୁବୀରାଥନ,
 ଗକବ ମାନା ସେନ ଡାଙ୍କ ଆଜୀ
 ଥାଣ୍ଡତେ ସନ୍ଦାସ ଏକୋଥିନ ବଣ ।
 ବାଧବ ପୋରାଲୀ ଚୁରାନି ପାତର
 ଚୁରାଇ ଛୁଲ୍ଲଙ୍କେ ନୋରାବେ ଥାବ,
 ବଲେବେ ଥୁରାବ ଥୁରିଲେ ଦେଖାତେ
 ଶ୍ରଭାବତେ ସି ଗବଜି ଉଠିବ ।
 ଗୈବାଳତ ପାଲେ ବ୍ୟାଧେ ମେଇ କଥା
 କିଯ ବା ମାନିବ ?— ଶବ-ସଙ୍କାନ
 ସାବ ନିତ୍ୟ କର୍ମ, ଧର୍ମ-ବଞ୍ଚପାତ—
 ତେଜେବେଇ ହସ ଗଢା-ପ୍ରାନ ।
 କଟୋରାଲୋ ହସ ସି ଠାଇତ 'ହଜୁବ',
 କଟୋର କିମାନ ଖାମନ ଦଣ
 କିହବେ ବୁଝିବ ଦେଶବ ହଜେ
 କାବା ଡୋଗ କବା ମେରକବୁନ୍ଦ ।
 ଧୋବାଯୋ ନିଦିଲେ ପୋନ ହଇ ଧୋଜ
 ସିଓ ଅପରାଧୀ ସି ଠାଇତ ହସ,
 ଅହିଂସ ଯୁଦ୍ଧବ ବନ୍ଦୀ ମେନାମର୍ଦ୍ଦ
 କିମବେନେ ତାକ ମୂର ପାତି ଗନ୍ଧ ?

এইসবে স্টেটা মোঞ্জা লাগি থাকে
বাধৰ পোরালী শুনি গোকৰ্ব।;
ব্যাধে শৰ টাচি বৈচিল তাৰে
পোতক তুলিলে আঁৰৰ পৰা।

(৩)

তাপ থালে জুট এই কাণ্ড দেখি,
মোমোজাটি প্ৰহৰী সোমাটি গল ;
মেথে পৰি আছে লেতুমেতু হই
কেৰাচিন তেলেবে তিতা কছল।
চাট হই গল জুয়ো ততালিকে
প্ৰহৰী হাততে ঝুমাটি গল ;
ক'ব জুইকুৰা কোনেমো জগালে—
পানীৰ ষ্টেটো পানী যে কল !

(৪)

বৈত্য-ধানৱৰ জীলা-ভূমি এষ
নিষ্ঠৰ নিৰ্জন কাৰাগাব ;
সেন্টৱকৰ বক্তু পৰিল ষি ঠাইত
বেদী হল আজি মাতৃ-পুত্রাব।

ମୁଖ୍ୟବିଲ

ନହୁଁ ଇଡାଳି ମୋର ସୋଗର ଜିଜିବି
କେବଳ ମାମରେ ଧରୀ ଲୋରର ଶିକଳି;
କାବାର ମାଜତ ପାଇ ପିଙ୍କିଲୋ ଡିଡ଼ିତ,
ଡାବିଲୋ କ୍ରାକ ମାଳା ମେରେ ହସ ବୁଲି ।

ଘୁରାଇ ଘୁରାଇ ତାକେ ଉପ କବି ପାଲୋ
ଧିଟି ବୀଜମୁଦ୍ର—ଧନି ଉଠିଲ ପ୍ରାଣତ;
ମେରେ ଆଜି ଅନ୍ତିମନି କବେ ଜିଜିବିତ,
ବାଜିଛେ ନୂପୁର ନନ୍ଦ ବୃଦ୍ଧାବନତ ।

ଘୁରି ଦେଖୋ ଜିଜିବିତ ଜଳେ ଅଗ୍ନିଶିଖ
ମେରେ ମୋର କାବାଗାବ ଦିଲେ ପୋହବାଟ,
ତାର ପୋହବତେ ଦେଖୋ ମଞ୍ଚାନ ଗଣବ
ଧ୍ୟାନ ମାତ୍ର ଜନନୀର ଚବଣ ମେରାଇ ।

ଜିଜିବିତେ ମୁଖ୍ୟବିଲ ତେଜୀ ବଡ଼ ଫୁଲ,
କାଇଟାଇଲା ମରାବତ ମୋର ଜୀବନର;
ଦେବତା ଡକତ କ'ତୋ ନାଲାଗେ ଯଦିଓ—

